fo"k; lwph

lEikndh;

पू. सरसंघचालक का उद्बोधन. 5

साक्षात्कार

डॉ. मुरली मनोहर जोशी.......... 7

विधानसभा चुनाव

महाराष्ट्र.................................... 8

हरियाणा.................................... 13

अन्य

झूठ बोल रही सीबीआई.......... 9

नक्सलियों ने की हत्या........... 10

अर्थव्यवस्था का घोर कुप्रबंधन.. 11

विश्वमंगल गो–ग्राम यात्रा........ 22

अनु.जाति मोर्चा अभ्यासवर्ग....... 24

श्रद्धांजलि

पथ प्रदर्शक प्यारेलालजी.......... 15

विशेष : संस्मरण...................... 28

प्रदेशों से

छत्तीसगढ़.......................... 10

मध्यप्रदेश............................ 21

दिल्ली................................ 25

उत्तराखण्ड, गुजरात........... 30

सम्पादक

çHkkr >k] lkaln

सम्पादक मंडल

lR;iky

d- d- 'kekZ

lathou dqekj flUgk

पृष्ठ संयोजन

/keZsUæ dkS'ky

सम्पर्क

Mk- eqdthZ Lefr U;kl

ih-ih-&66] lqcze.;e Hkkjrh ekxZ

ubZ fnYyh&110003

Qksu ua- +91¼11½&23381428

QSDl ¼ +91¼11½&23387887

lnL;rk grq ¼ +91¼11½&23005700

सदस्यता शुल्क

okf"kZd 100#- | f=okf"kZd 250#-

e-mail address

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डा. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। : सम्पादक – प्रभात झा

{ *राष्ट्रीयता के उत्थान तथा मानवता के कल्याण के लिए दृढ़व्रतरत सुन्दर व्यक्तित्व की सर्वत्र अपेक्षा और आवश्यकता है।* }

-श्रीमद्भागवत गीता

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

आपातकाल के 'डियर रेड' चल बसे

Vब 'वे' 11 अशोका रोड, नई दिल्ली स्थित भारतीय जनता पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय के पिछवाड़े में नहीं मिलेंगे। उन्हें कोई मिलने जाएगा तो भी वे वहां नहीं दिखेंगे। तो कैसे दिखेंगे। यह तो सत्य है कि वे अब शरीर से नहीं दिखेंगे पर लोगों के दिल में कार्यकर्ताओं के मन में जो उन्होंने 'घरौंदा', 'प्रेम का' बनाया है, वह सदैव अजर–अमर और अक्षुण्ण रहेगा।

वे 'कैंसर' से ग्रस्त नहीं थे, बल्कि मस्त थे। वे उससे भी दो–दो हाथ कर रहे थे। उन्होंने कैंसर को चुनौती दी थी। वे दस साल तक कैंसर से लगातार जूझते हुए आखिर 6 अक्टूबर 2009 को प्रातः साढ़े छह बजे अपना नश्वर शरीर छोड़ ईश्वर के पास चले गए। हम सभी जानते हैं कि मौत से लड़ना वही जानता है, जो जिंदगी को देश व समाज के लिए खपाना जानता हो।

घटना 5 अक्टूबर 2009 की रात की है। भाजपा के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री, रामलालजी, भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अनिल जैन को साथ लेकर एम्स में उन्हें देखने गए। उस समय भी उन्होंने हंसते हुए बातचीत की। सभी का हालचाल पूछते रहे और कहा जल्दी ठीक होकर कार्यालय आता हूं''। वे ध्येय के प्रति रोगशैय्या पर भी समर्पित थे। यह आस्था और निष्ठा का पाठ उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से पढ़ा था। वे मृत्युपर्यन्त प्रचारक रहे। अपने लम्बे जीवन में उन्होंने संघ, जनसंघ और भाजपा का सतत् कार्य किया। वे अनेक पदों पर रहे। 'पद' को उन्होंने छोटा कर दिया था।

''स्व. प्यारेलाल खंडेलवाल'' कार्यकर्ताओं के मित्र थे। वे खुलकर मन की बात करते थे और लोगों की बात मन से सुनते थे। उन्होंने कभी नेतागिरी नहीं की, पर हां, कार्यकर्ताओं से उन्होंने सदैव नैतिक गांधीगिरी जरूर की। वे कार्यकर्ताओं को तोड़ने के बजाए जोड़ने में विश्वास रखते थे। वे बड़े नेताओं से भी अपनी बात कहने में झिझका नहीं करते थे। जो बात उन्हें समझ में नहीं आती थी, वे उस बात को 'पत्र–संवाद' के माध्यम से पहुंचा देते थे। एक घटना बड़ी रोचक है। उन्हें आपातकाल में बाहर रहने को कहा गया था। वे धोती–कुर्ता के बजाए पेंट बुशर्ट पहनने लगे थे। उन्होंने अपना नाम 'डियर रेड' रख लिया था। 'डियर रेड' डियर यानि 'प्यारे' एवं रेड यानि 'लाल'। वे आपातकाल में नहीं पकड़े गए। वे सभी कार्यकर्ताओं के घर 'डियर रेड' बनकर पहुंचते रहे और आपातकाल की अंधेरी रात से जुझते रहे।

स्व. प्यारेलाल जी को नौजवानों के बीच रहने, काम करने, उन्हें सदैव काम में लगाए रखने का शौक था। वे आने वाली पीढ़ी को संवारने में विश्वास रखते थे। हालांकि प्रारम्भ से लेकर वर्षों तक उनका कार्यक्षेत्र मध्यप्रदेश रहा, जब वे दिल्ली आए तो उनका संबंध संपूर्ण देश से होता चला गया। 'वे' उत्तरपूर्व में भी कार्य–विस्तार के लिए गए।

स्व. प्यारेलालजी प्रचारक थे। भाजपा में जो पूर्णकालिक थे, उनकी चिंता और उनकी देखरेख करने का काम उन्हें दिया गया था। वे कर्त्तव्य और दायित्व के प्रति सदैव सजग रहे।
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव के दौरान सन् 2008 में वे बिस्तर पर पड़े–पड़े भाजपा मध्यप्रदेश के भोपाल स्थित पं. दीनदयाल परिसर (प्रांतीय कार्यालय) के राष्ट्रीय पदाधिकारी कक्ष से प्रदेशभर के उन कार्यकर्ताओं को, जो काम में नहीं जुटे थे, या जो विधानसभा में लड़ रहे थे, उन सभी को समझाने का कार्य जारी रखा। रोगशैय्या पर पड़े–पड़े वे नित्य पचास से साठ कार्यकर्ताओं से नित्य संपर्क करते थे। उनकी कार्यवीरता का इससे बड़ा उदाहरण और क्या मिल सकता है।

हर 'जीवन' का जाना तय है। जीवन आता है इसीलिए क्योंकि उसे जाना ही है। बस बात इतनी भर रह जाती है कि आप जिए तो किया क्या? कितना जिए नहीं, कैसे जिए और क्यों जिए? समाज इस प्रश्न का उत्तर हर जीवन से सकारात्मक चाहता है। इसमें कोई दो मत नहीं कि प्यारेलालजी सकारात्मक जीवन जिए। उनके निधन पर भाजपा का शीर्ष नेतृत्व शीश झुकाने तो आया ही, साथ ही प्रधानमंत्री भी आए, क्योंकि जिस सदन (राज्यसभा) के वे सुपात्र थे, श्री मनमोहन सिंह उस सदन के नेता हैं।

माननीय उपराष्ट्रपति व राज्यसभा के उपसभापति श्री हामिद अंसारी भी आए। दिल्ली से लेकर भोपाल और देशभर से संवेदनाओं की सूचनाएं आनी शुरू हो गईं। 6 अक्टूबर की शाम को उनका पार्थिव शरीर मध्यप्रदेश पहुंचा। वहां उनके निवास से उनका पार्थिव शरीर पं. दीनदयाल परिसर पहुंचा।

हजारों अश्रुपूर्ण नेत्रों ने उन्हें अंतिम विदाई दी। भोपाल स्थित भदभदा नदी के किनारे श्मशान घाट में उनके पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार उनके स्वजनों ने मुखाग्नि देकर किया।

उधर 'यज्ञ' की तरह धू–धू कर प्यारेलालजी का पार्थिव शरीर "प्यारेलालजी अमर रहे" के गगनभेदी नारों के बीच जलता रहा। सभी ने पंचतत्व में मिल रहे इस समर्पित कर्मयोगी को अंतिम प्रणाम कर अपने दोनों करों से श्रद्धांजलि अर्पित की।■

चीन के साथ बन रहे हैं १९६२ जैसे हालात : राजनाथ सिंह

Hkk जपा ने केंद्र सरकार पर चीन के प्रति कमजोर नीति रखने का आरोप लगाते हुए आज चेतावनी दी कि यदि चीन अपनी 'आधिपत्यवादी नीति' को जारी रखता है, तो 1962 जैसे हालात से इंकार नहीं किया जा सकता। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने संवाददाता सम्मेलन में कहा, "यदि चीन अपनी आधिपत्यवादी नीति को जारी रखता है, तो 1962 जैसी स्थिति से इंकार नहीं किया जा सकता है।"

उन्होंने कहा कि ऐसे में जब चीन ने खुद को एक सुपरपावर के रूप में स्थापित करने के लिये इस साल हेलीकाप्टर के जरिये घुसपैठ करने के अलावा 270 बार और पिछले साल 1,040 बार घुसपैठ कर दबाव बनाया है, तब नई दिल्ली ने अफसोसजनक रूप में इसे मीडिया का प्रचार बताया। भाजपा अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि चीनी थिंक टैंक ने बीजिंग को सलाह दी थी कि वह भारत के 25 से 30 टुकड़े कर दे। उन्होंने चीन की सक्रिय नीति से देश की संप्रभुता की रक्षा की मांग की।

श्री राजनाथ ने कहा कि भारत, चीन और ब्रिटेन के बीच हुए त्रिपक्षीय समझौते बाद से चीन–भारत के बीच कोई विवाद नहीं रहा है, लेकिन केन्द्र की कमजोर नीति की वजह से अब इस तरह की घटनाएं हो रही हैं। उन्होंने ब्रह्मपुत्र नदी की धारा में प्रस्तावित परिवर्तन का हवाला देते हुए कहा कि भारत को चीन पर एक जल संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए दबाव डालना चाहिए। इस नदी की धारा में बदलाव करने पर यह असम, अरूणाचल प्रदेश और बांग्लादेश को प्रभावित करेगी। भाजपा अध्यक्ष ने अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को दी जाने वाली सहायता राशि को तिगुना करने को लेकर उसकी आलोचना की क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा स्वीकार कर चुके हैं कि पाकिस्तान इस राशि का भारत के खिलाफ इस्तेमाल कर रहा है।

उन्होंने बांग्लादेशी घुसपैठ को पूर्वोत्तर और खासतौर पर अरूणाचल प्रदेश के लिए एक गंभीर खतरा बताते हुए कहा कि यदि केन्द्र ने कार्रवाई नहीं की तो आबादी का स्वरूप बदल जाएगा। ■

~~~~~~~~~~☯☯☯~~~~~~~~~~

कमल संदेश परिवार की ओर से सभी सुधि पाठकों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

~~~~~~~~~~

विजयादशमी महोत्सव के अवसर पर पूज्य सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत ने कहा-

राष्ट्र की सुरक्षा सर्वोपरि

प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी विजयादशमी अर्थात् संघ–स्थापना दिवस पर गत 27 सितम्बर की शाम प.पू. सरसंघचालक ने अपने उद्बोधन में राष्ट्र के समक्ष चुनौतियों की चर्चा करते हुए देशवासियों का आह्वान किया। शस्त्र पूजन से आरम्भ हुए इस कार्यक्रम के विशेष अतिथि थे सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं आध्यात्मिक विभूति श्री भय्यू जी महाराज। यहां प्रस्तुत है सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत के विस्तृत उद्बोधन का संपादित स्वरूप।

ik श्चात्य कालगणनानुसार आज से 84 वर्ष पूर्व इसी दिन संघ का हिन्दू समाज के संगठन का कार्य प्रारंभ हुआ था। हिंदू समाज का संगठन एक अनिवार्य राष्ट्रीय कर्तव्य है, यह बहुत समझाने की आवश्यकता नहीं। भले ही कोई हिंदुत्व अथवा हिंदू शब्द का उपयोग करे या न करे, हिन्दुस्थान के प्रत्येक व्यक्ति के हृदय की गहराइयों में यह भाव सुप्त, जाग्रत परंतु अव्यक्त तथा व्यक्त, तीनों में से किसी न किसी स्थिति में मिलता है। हिंदू शब्द किसी पूजा–पद्धति, भाषा, प्रदेश विशेष, मत विशेष को चिह्नित नहीं करता है, बल्कि यह सभी मत–पंथ, भाषा, प्रांत–पक्षों का सम्मान करते हुए, स्वीकार करते हुए, उन सबको जोड़कर मिल–जुलकर रहने की विधा सिखाने वाली भारत की चिरंतन संस्कृति का, जीवन पद्धति का नाम है, यह बात अपना सर्वोच्च न्यायालय भी कह चुका है।

संपूर्ण दुनिया को आज इसकी आवश्यकता है। पृथगात्म व भेदमूलक दृष्टिकोण पर आधारित व्यवस्थाओं के प्रयोग असफल हुए। इसलिये संपूर्ण विश्व की सोचने, समझने वाले लोग एकात्म व समग्र दृष्टि के लिए भारत की ओर आशाभरी निगाहों से देख रहे हैं। परन्तु आज जब हम अपने देश की परिस्थिति, मनःस्थिति व नीतियों को देखते हैं तो ऐसा विश्वगुरू भारत खड़ा करने की हमारी स्थिति व गति पर ही प्रश्नचिह्न लगे दिखाई देते हैं।

कुचेष्टाएं असफल करें

सर्वसामान्य लोगों के भी मन में सबसे पहला प्रश्न (जब वे देश का विचार करते हैं) अपने देश की सुरक्षा के संबंध में उभरता है। पाकिस्तान व चीन के हमारे साथ व्यवहार तथा उनके अंतस्थ उद्देश्यों के साथ हम भलीभांति परिचित हो ही गये हैं। बंगलादेश भी हमारे लिए समस्याएं पैदा कर रहा है। एशिया महाद्वीप में अपनी हितरक्षा हेतु अमरीका अपना दोतरफा खेल (प्रकट व छद्म) खेल ही रहा है। नेपाल, ब्रह्मदेश, श्रीलंका आदि देशों को शीघ्रातिशीघ्र अपने प्रभाव में लाने की इनकी चेष्टाएं चल रही हैं। अपनी संसद ने चीन द्वारा 1962 में आक्रमण कर हथियायी गयी लद्दाख, सिक्किम व अरुणाचल प्रदेशों की भारतीय भूमि का प्रत्येक इंच वापस लेने का संकल्प किया था। परंतु चीन तो भारत के चारों ओर मौजूद देशों में अपने प्रभाव को बढ़ाकर भारत की घेराबंदी करने में लगभग सफल हो चुका है। स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे देश पर बार–बार थोपे गये युद्धों तथा सीमा अतिक्रमण के प्रसंगों से थोड़ी बहुत सीख लेकर हमने अपने सामरिक बल को सदा पूर्ण सन्नद्ध रखने में अपनी उदासीनता को कुछ मात्रा में छोड़ा अवश्य है, परंतु अभी भी हमारी सामरिक तैयारी चीन से बहुत कम है। हमें अपनी सीमाओं की सुरक्षा के और पुख्ता प्रबंध करने हैं। अपनी छिद्रित सीमाओं से निरंतर चल रही घुसपैठ को तत्काल कठोरतापूर्वक रोकना चाहिये। पहले से अंदर घुसे घुसपैठियों के बारे में 'चिह्नित करो, नाम हटाओ, बाहर भेजो' की नीति का भी तत्काल अवलंबन होना चाहिए। चीन से एक बार व पाकिस्तान से बार–बार धोखा खाने के पश्चात् भी हमारा राजनयिक भोलापन, असावधानी व अदूरदर्शिता वैसी की वैसी कायम होने के संकेत देने वाली घटनाएं अधिक मात्रा में सुनाई देती हैं। आज हालत यह है कि थोड़ी सी अधिक पहल से, सक्रियता से दक्षिण एशिया के सारे देशों को अपने अच्छे मित्र बनाकर केवल तीसरे जगत के देशों को ही नहीं अपितु सारी दुनिया को एक सर्वहितेच्छु प्रामाणिक नेतृत्व देने की महत्वाकांक्षा लेकर अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अपने कदम बढ़ाने की योजना करना तो दूर रहा, अपने ही भूभागों में अंतरराष्ट्रीय राजनीति के षड्यंत्रों को ही पहचानकर हम विफल कर लें, तो बहुत है।

देश की अखण्डता सुनिश्चित हो

'भारत के अविभाज्य अंग कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा कब्जाए कश्मीर को मुक्त कर पुनः शेष देश के साथ जोड़ना, इतनी ही समस्या शेष है।' सारे देश का यह मत संसद के सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा प्रकट हुए वर्षों बीत गये, पर समस्या और उलझायी जा रही है और हम अवसर चूकते चले जा रहे हैं। अमरनाथ आंदोलन के कारण देश की अखंडता व

एकात्मता के उभरे हुए सशक्त स्वरों को बल देने के बजाय वहां के प्रदेश शासन–प्रशासन की विपरीत नीतियों को ही शह दी जा रही है। जम्मू व लद्दाख की जनता का न्यायोचित अधिकार उनको केवल उनके मनोबल, पुरुषार्थ व एकता के कारण प्राप्त होता है, केन्द्र शासन अथवा प्रदेश शासन के कारण नहीं, यह स्थिति किसी के हित में नहीं है। कश्मीर घाटी में देशभक्ति के स्वरों को अधिक बल देने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से कश्मीर के विस्थापित हिंदुओं की वापसी करवाकर वहां का जनसंख्या असंतुलन ठीक हो सके, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। भ्रमपूर्ण घोषणाओं मात्र से काम नहीं चलेगा। भारतभक्त व हिंदू धर्मानुयायी बनकर स्वयं की सुरक्षा के लिए पूर्ण सन्नद्ध व सरकार की ओर से आश्वासित होकर, सम्मानपूर्वक सदा के लिए वापसी की कश्मीरी हिंदुओं की न्यायोचित मांग अविलंब पूरी होनी चाहिये।

देश के उत्तर–पूर्वांचल में राष्ट्रविरोधी शक्तियों के खुले खेल चल रहे हैं। न्यायालयीन आदेश व गुप्तचर विभागों की पुष्टियों के बावजूद बंगलादेशियों की घुसपैठ पर रोक लगाने वाली किसी मजबूत नीति का परिचय नहीं मिल रहा है। वोटों की राजनीति के दबाव में राष्ट्रहित की उपेक्षा करना कितना महंगा पड़ता है इसका और कितना अनुभव हम लेना चाहते हैं? हाल ही में वहां के उत्तर कछार क्षेत्र में डिमासा व जिमि नागा बंधुओं को आपस में लड़ाने के लिए जो नृशंस रक्तपात हुआ, उसके पीछे की उग्रवादी, अलगाववादी, परपोषित, मतांतरकारी ताकतों को वोट–लोभी लचर मनोवृत्ति की सुरक्षा मिलती है। देश के आंतरिक अंचलों में चल रहे तथाकथित माओवादी उग्रवाद व जिहादी उग्रवाद से लेकर सीमा प्रदेशों के दोनों ओर चलने वाले उग्रवाद तक, सभी में राष्ट्रविरोधी तत्वों के साथ आई.एस.आई. सहित अन्यान्य विदेशी हस्तक संस्थाओं का संयुक्त गठबंधन काम कर रहा है, यह शासन के पास स्पष्ट जानकारी है। फिर भी इसका शीघ्र व परिणामकारी उपाय करने वाली कोई नीति, भाषणों व घोषणाओं के अपवाद छोड़कर, कहीं अनुभव में नहीं आ रही है। निम्नलिखित पांच सूत्रों के आधार पर योजना बनाकर उसका तुरंत क्रियान्वयन अतीव आवश्यक है–

1. उग्रवादी गतिविधियों पर शासन– प्रशासन द्वारा सर्वत्र एक साथ कठोर प्रहार।
2. सुरक्षाबलों का सशक्तिकरण।
3. सूचना संग्रह तथा गुप्तचर विभाग का सक्षमीकरण।
4. समाज का सुरक्षा की दृष्टि से व्यापक प्रबोधन व प्रशिक्षण।
5. बेरोजगारी, शोषण व भ्रष्टाचार से शीघ्र मुक्ति।

विकास का सूत्र

पांचवें सूत्र की बात करते हैं तो विकास की बात ध्यान में आती है। विश्व के देशों में शीघ्र विकास कर आर्थिक महाशक्ति बन सकने वाले देशों में भारत का भी नाम आता है। अपने एकात्म, समग्र व मानवकेन्द्रित दृष्टिकोण के आधार पर हमें भारत के लिए अलग विशिष्ट विकास की अवधारणा, उद्दिष्ट व विकासपथ बनाने पड़ेंगे। भारत आज भी कृषि प्रधान देश है। पर बजट का कितने प्रतिशत कृषि पर खर्च होता है? विश्व का अन्नदाता किसान आत्महत्या का निर्णय क्यों करता है? कृषि के साथ गोपालन, गोसंवर्धन, पशुपालन बंद हो गया। कृषि उपज पर लागत पर आधारित मूल्य नहीं मिलता, साहूकारों से भी अधिक जानलेवा चक्र बैंकों व सरकारी कर्जे का हो गया है। शहर केन्द्रित विकास के कारण संयुक्त परिवार व्यवस्था की सुरक्षा अनुपलब्ध हुई है। हमें विकासपथ बदलना होगा। विश्व व्यापार संगठन की वंचनापूर्ण नीतियों के चक्रव्यूह से बाहर निकलना पड़ेगा। हमारी खाद्यान्न सुरक्षा संकट में डालने वाली बहुराष्ट्रीय बीज कंपनियों को अनावश्यक न्योता देने वाली नीतियों का त्याग करना होगा। कृषि के लिए उपयुक्त जमीनों को 'सेज' से बचाना होगा। गो आधारित कृषि व गो उत्पादों के वनस्पति व मनुष्यों के लिए पोषक व औषधीय गुण सिद्ध हो चुके हैं। हमें अपने स्वत्व पर आधारित काल–सुसंगत तंत्र की खोज व प्रचार करना होगा।

आज शिक्षा का व्यापारीकरण हो रहा है इसलिए वह महंगी हो रही है। देश को जोड़ने एवं देश से जुड़ना सिखाने वाली शिक्षा पाठ्यपुस्तकों में नहीं है, बल्कि उसके विपरीत है। सुरक्षा, अर्थ व शिक्षा नीति राष्ट्र–अस्मिता केन्द्रित होने से ही देश एक परमवैभव संपन्न राष्ट्र के रूप में उभर सकता है। परंतु इस राष्ट्र–अस्मिता की स्पष्ट कल्पना समाज के सामने स्पष्ट शब्दों में रखनी होगी। यह जिनका कर्तव्य है उसमें अधिकांश नेता तो वोटों की राजनीति पर आश्रित होकर विपरीत आचरण करते हुए स्वत्व की प्रताड़ना में ही लगे दिखते हैं। उनसे यह अपेक्षा है कि वे वोटों के लालच में प्रान्त व भाषा के भेदों को उभारने की नीति न अपनाएं। जैसे कर्नाटक के मुख्यमंत्री महोदय ने तमिलनाडु के मुख्यमंत्री महोदय से मिलकर महान संत तिरुवल्लुवर की प्रतिमा बंगलूरु में व महान संत सर्वज्ञ की प्रतिमा चेन्नै में स्थापित करने की पहल की, ऐसे स्वस्थ उदाहरण की अपेक्षा हमारे देश के राजनेताओं से है। वे सभी इसको पूर्ण कर सकें, ऐसा लोकतंत्र खड़ा करने के लिए चुनाव पद्धति में परिवर्तन की आवश्यकता भी सभी महसूस करते हैं।

परिस्थिति पर विजय का मार्ग

हिन्दुत्व सबको अपना मानता है व किसी का विरोध नहीं करता, इसलिए हिन्दू समाज का सामान्य स्वभाव सहिष्णुता का है। परंतु उदारता, अहिंसा व प्रेम की पराकाष्ठा सिखाने वाली संस्कृति, देवी–देवता, परंपराएं आदि विश्व की एकाधिकारवादी तथा कट्टर प्रवृत्तियों के द्वारा उपहास व आक्रमण की शिकार बनाई जा रही हैं। हिन्दू समाज को लालच, बलप्रयोग अथवा छलकपट से मतांतरित कर तोड़ा जा रहा है। मतों के लालच में शासनारूढ़ राजनेतागण भी हिन्दुत्व व हिन्दू समाज की अवहेलना कर राष्ट्रविघातक शक्तियों के हाथों में खेलने से नहीं हिचकिचाते। आज आवश्यकता इस बात की है कि देश की राजनीति, राजनीतिज्ञ तथा राजनीतिक तंत्र देश की पहचान, सुरक्षा, एकात्मता के साथ खिलवाड़ न करे, राष्ट्रविघातक शक्तियों का साक्षी न बने, समाज के अंतिम व्यक्ति तक की आवश्यकताओं व वेदनाओं के प्रति प्रामाणिक व संवेदनशील बने। परंतु प्रजातंत्र में यह काम अंततोगत्वा सज्जनशक्ति का अनुसरण करने वाले संगठित समाज को ही करना पड़ेगा। संघ के पास शाखा के रूप में वह तंत्र है। परिस्थिति पर विजय का यह एकमेव रास्ता है। यह दुनिया की आवश्यकता व भारत के अस्तित्व के लिए अनिवार्यता है। दानवता पर मानवता की विजय के इस उत्सव पर हम उस उपाय का अनुसरण करें, यही आह्वान है। ■

वैज्ञानिकों को हतोत्साहित कर रही है कांग्रेस सरकार : डॉ. जोशी

चंद्रयान की कामयाबी ने एक बार फिर साबित कर दिया कि भारत के वैज्ञानिक सीमित साधनों में भी कमाल कर सकते हैं। इस उपलब्धि ने यह भी बताया है कि हमारे वैज्ञानिक आलोचनाओं को तालियों में बदलने की काबिलियत रखते हैं। चंद्रमा पर पानी की खोज के साथ खत्म हुई चंद्रयान की सफल यात्रा पर हमने टटोला इस परियोजना की नींव रखने वालों में शामिल पूर्व केंद्रीय मंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेता डा. मुरली मनोहर जोशी को। पेश है, चंद्रयान की सफलता और इसकी छाया में देश के सामने मौजूद विज्ञान व प्रौद्योगिकी क्षेत्र की बड़ी चुनौतियों पर वरिष्ठ भौतिकशास्त्री डा. जोशी से दैनिक जागरण के विशेष संवाददाता प्रणय उपाध्याय की बातचीत के अंशः

चंद्रयान योजना का खाका आपके कार्यकाल में बना था। आज इस परियोजना की सफलता का डंका पूरी दुनिया में बज रहा है। एक भौतिकशास्त्री के तौर पर आप इसे किस रूप में देखते हैं?

यह भारत के लिए एक महत्वपूर्ण सफलता है। खासकर वैज्ञानिकों के लिए, जिन्होंने फिर साबित किया है कि अंतरिक्ष तथा अन्य जटिल तकनीकी के क्षेत्र में भी हम दुनिया में किसी से कम नहीं हैं। पोखरण–2 के बाद अमेरिका सहित कई देशों ने तो हमें कन्वेयर बेल्ट और पहिए जैसे साधारण उपकरण तक देने पर प्रतिबंध लगा दिया था। तमाम बाधाओं के बावजूद हमारे वैज्ञानिक सफलता की नई छलांग लगाने में कामयाब रहे हैं। उम्मीद है कि यह सफलता संभावनाओं के नए दरवाजे खोलेगी।

मुझे याद है जब राजग सरकार के कार्यकाल में हमने चंद्रमा पर यान भेजने की घोषणा की थी तो हमारी काफी आलोचना हुई थी। कई लोगों ने तो यहां तक कहा कि आपको मून स्ट्रोक हो गया है। अब जबकि चांद पर पानी के संकेत मिले हैं तो इसे मास्टर स्ट्रोक माना जा रहा है।

भारत के वैज्ञानिकों ने इतनी महत्वपूर्ण उपलब्धि का दावा करने में देर क्यों लगाई?

मैं मानता हूं कि हमारे वैज्ञानिकों में शायद इतनी बड़ी खोज को प्रकाशित करने का आत्मविश्वास नहीं है। यह समस्या हमारे देश के पूरे वैज्ञानिक तंत्र की है। ऐसे दर्जनों उदाहरण मैं आपको गिना सकता हूं जहां हम महज इस कमी और झिझक के कारण महत्वपूर्ण खोजों को अपने नाम से दर्ज कराने से चूक गए।

क्या आपको लगता है कि चंद्रयान-१ की सफलता से इस परियोजना के दूसरे चरण का रास्ता आसान बनेगा और वैज्ञानिकों की हौसला अफजाई होगी?

यह बहुत हद तक इस पर निर्भर करेगा कि सरकार से वैज्ञानिकों और शोध संस्थाओं को कितना समर्थन मिलता है। चंद्रयान–2 हो या अन्य कोई ऐसी परियोजना उसे सरकार से स्वीकृति और समर्थन दोनों की दरकार होती है। इसलिए महत्वपूर्ण है कि सरकार में बैठे लोगों के पास वैज्ञानिक दृष्टि हो। इससे भी अहम है कि वहां बैठे लोगों का दर्शन क्या है।

देश में विज्ञान की शिक्षा और खासकर अगले स्तर की वैज्ञानिक चुनौतियों के मुकाबले भारत को मुस्तैद करने की तैयारियां कैसी नजर आती हैं आपको?

उन्नत क्षेत्रों की बात करें तो परमाणु विज्ञान के क्षेत्र में हमारा बजट लगातार घटता जा रहा है। यह उत्साहवर्द्धक है कि हमारे अंतरिक्ष विज्ञान से जुड़े संस्थानों ने सरकारी मदद के बिना भी खड़े होने के रास्ते तलाश लिए हैं। स्पेस कामर्स के सहारे न केवल हम काफी सस्ती दर पर सूचनाएं मुहैया करा रहे हैं, बल्कि कम लागत में अन्य देशों के उपकरण अंतरिक्ष में भेजने की योग्यता रखते हैं। हमारी यह काबिलियत कई देशों के लिए ईर्ष्या का भी कारण है, लेकिन शोध पर बेहद कम ध्यान दिया जा रहा है। विश्वविद्यालयों में विज्ञान, विशेषकर वैज्ञानिक अनुसंधान लगभग ठंडा पड़ा है। सरकार संचालित वैज्ञानिक व औद्योगिक अनुसंधान परिषद के परचम तले चलने वाली परियोजनाओं में भी माहौल उत्साहवर्द्धक नहीं है। आईआईटी के प्राध्यापकों के साथ मानव संसाधन विकास मंत्रालय का ताजा टकराव यह बताता है कि विज्ञान और शोध से जुड़े लोगों के प्रति सरकार का नजरिया क्या है। यह मत भूलिए कि इन्हीं में से कुछ लोग परमाणु शोध पर काम कर रहे हैं, राकेट विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान कर रहे हैं और विज्ञान की अन्य शाखाओं को आगे बढ़ा रहे हैं। इनकी बात सहानुभूतिपूर्वक सुननी चाहिए। वैज्ञानिक सफलताएं बटन दबाकर हासिल नहीं होतीं। शोध की सतत प्रक्रिया से इन्हें

हासिल किया जाता है और इसके लिए अनुकूल माहौल की जरूरत होती है।

क्या कारण है कि भारत में पीएचडी की तादाद मैक्सिको से भी कम है और तमाम प्रयासों के बावजूद मौलिक शोध का ग्राफ बढ़ नहीं रहा है?

इसका सबसे बड़ा कारण है कि हमारे विश्वविद्यालयों में अब भी शोध की सुविधाएं नहीं हैं। जब तक विश्वविद्यालयों में अनुसंधान सुविधाएं नहीं होंगी, तब तक हालात सुधरने नामुमकिन हैं। उच्च शिक्षा पर बात तो बहुत हो रही है, लेकिन यह सोचना होगा कि क्या हमारे लिए इसके मायने केवल एमए, एमएससी या एमकाम जैसी डिग्रियों तक सीमित है। अगर आपको अच्छे वैज्ञानिक और विज्ञान की उपलब्धियां चाहिए तो विश्वविद्यालयों को मजबूत करना होगा।

मैं मौलिक विज्ञान की बात कर रहा हूं, तकनीक की नहीं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी से ही जुड़े एक अन्य पहलू पर भी इन दिनों बहस चल रही है। वह है विकास से उपजी जलवायु परिवर्तन की चुनौती के समाधान खोजने की। इस पर क्या कहेंगे आप?

विज्ञान और तकनीक को अलग–अलग कर देखिए। विज्ञान का अनुप्रयोग है तकनीकी। यानी. . विज्ञान के रथ पर सवार होकर आप स्वर्ग भी जा सकते हैं और नर्क भी। इसके लिए विज्ञान को दोष देना ठीक नहीं। दरअसल, दोष है विज्ञान को लेकर विकास के पश्चिमी माडल और सोच में। पश्चिम की सोच कहती है कि यह धरती हमारे उपभोग के लिए है और इसके दोहन की हरसंभव तकनीक व साधन हमारे पास होने चाहिए।

इसी सोच ने धरती के बर्बर दोहन की होड़ को जन्म दिया। विकास का यह माडल पर्यावरण और इंसान को अलग मानता रहा। जबकि भारतीय दर्शन सदियों से यह मानता आया है कि हम और हमारा पर्यावरण एक हैं।

भारत के लिहाज से आप इस चुनौती को कितना गंभीर मानते हैं?

भारत ही नहीं, यह मुसीबत सबके लिए खतरनाक है। क्योंकि हमारी धरती एक है, उसका पर्यावरण एक है। इसका संतुलन बिगड़ा तो परिणाम सभी के लिए भयावह होंगे।

जब तक हम विकास के इस उपभोक्तावादी माडल को नहीं बदलते, तब तक जलवायु परिवर्तन को रोकना मुमकिन नहीं है। सबसे जरूरी है कि दुनिया के धनी और पूंजीपति मुल्क अपनी जीवनशैली को संयमित करें। विकास के मौजूदा माडल से उपजे उपभोग के उत्पादों के साथ इस बात का भी आकलन हो कि आखिर इसकी पर्यावरण को क्या कीमत चुकानी पड़ रही है। धरती पर महज छठा हिस्सा कहलाने वाली पूंजीपति आबादी को शेष दुनिया को तबाह करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। ■

महाराष्ट्र में भाजपा शिवसेना गठबंधन सरकार बनने के आसार : कप्तान सिंह सोलंकी

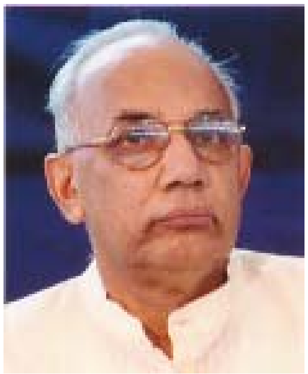

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और महाराष्ट्र में संगठन प्रभारी प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस–एनसीपी गठबंधन को जीतना लोहे के चने चबाना जैसा असंभव बन चुका है। मराठा नेता और एनसीपी सुप्रीमो के हाथ से तोड़ते उड़ गए हैं। उन्हें महाराष्ट्र की जनता से भावनात्मक अपील करना पड़ रही है कि यह उनके लिए अंतिम चुनाव है। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और एनसीपी के सर्वाधिक बागी प्रत्याशी चुनाव संग्राम में ताल ठोंक कर खड़े हैं।

कांग्रेस के लिए इससे बड़ा सिर दर्द क्या होगा कि कांग्रेस के वरिष्ठ नेता वित्त मंत्री सुनील देशमुख ने भी कांग्रेस हाईकमान को आईना दिखा दिया है और निर्दलीय के रूप में किस्मत आजमाने की चेतावनी दे दी। उनका आरोप है कि कांग्रेस के कार्यकर्ता की घोर उपेक्षा है। कांग्रेस में भाई भतीजावाद चरम पर है। सुनील देशमुख के क्षेत्र से राष्ट्रपति के बेटे राजेन्द्र शेखावत को कांग्रेस का टिकट दिया जाना कांग्रेस के परंपरागत कार्यकर्ता बर्दाश्त नहीं करेंगे। प्रो. सोलंकी ने महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी शिवसेना गठबंधन की सरकार बनने की आशा व्यक्त करते हुए कहा कि यह आशावाद नहीं जमीनी हकीकत है।

प्रो.कप्तान सिंह सोलंकी ने बताया कि महाराष्ट्र में 13 अक्टूबर को होने जा रहे मतदान के पहले नामांकन वापस के दिन कांग्रेस को भारी झटका लगा है। प्रदेश की 288 सीटों के लिए हो रहे चुनाव में 150 से लेकर 173 से अधिक सीटों पर बागी प्रत्याशी जम रहे। इन बागियों में कांग्रेस और एनसीपी के कार्यकर्ता सर्वाधिक है जिन्होंने या तो मनसे, या बसपा अथवा सपा का दामन थाम लिया है अथवा निर्दलीय बनकर ही भाग्य आजमा रहे हैं।

प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने विदर्भ क्षेत्र में भाजपा शिवसेना की संरचना को मजबूत बताया और कहा कि यद्यपि यह कांग्रेस का मजबूत गढ़ रहा है। लेकिन इस चुनाव में कांग्रेस एनसीपी के किले में यही से सेंध लगी है। विदर्भ के मतदाताओं का रिकार्ड है कि वे करवट बदलने में देर नहीं करते हैं।

पिछले दस वर्षो में देश में सर्वाधिक किसानों ने इस क्षेत्र में आत्म हत्याएं की हैं। सबब कांग्रेस की गलत आर्थिक नीतियां, आर्थिक उदारीकरण है जिनका ढोल पीटकर किसानों की उपेक्षा कर रही है। प्रो. सोलंकी ने कहा कि चुनाव प्रचार के दौरान विदर्भ के किसानों ने कांग्रेस एनसीपी के प्रति आक्रोश जताते हुए बताया कि अगस्त में 36 और सितम्बर माह के पहले पखवाड़ा में 16 किसानों ने खुदकुशी की। महाराष्ट्र के कद्दावर नेता शरद पवार के कृषि मंत्री रहने और केन्द्र सरकार का कांग्रेस द्वारा नेतृत्व किये जाने पर यह हकीकत सवालिया निशान लगाती है।

प्रो.कप्तान सिंह सोलंकी ने बताया कि 13 अक्टूबर के मतदान में महाराष्ट्र में भाजपा शिवसेना गठबंधन की सरकार बनना तय है। ■

कांग्रेस के दबाव में झूठ बोल रही सीबीआई : जोगिन्दर सिंह

Ckफोर्स दलाली कांड में आरोपियों के खिलाफ सीबीआई के पास पूरे प्रमाण हैं और वह सरकार के दबाव में अपने द्वारा जुटाए सबूतों को झुठलाने की कोशिश कर रही है। बोफोर्स सौदे में दी गई दलाली से संबंधित दस्तावेज स्विट्‌जरलैंड से भारत लाने वाले सीबीआई के तत्कालीन निदेशक जोगिंदर सिंह ने साफ कहा कि बोफोर्स कंपनी द्वारा दिए गए इन दस्तावेजों को झुठलाना सच्चाई का गला घोंटने के समान है।

जोगिंदर सिंह ने कहा कि सरकार जो मर्जी चाहे कहे और सीबीआई उसके कहे अनुसार चले लेकिन बोफोर्स में आरोपियों के खिलाफ ठोस सबूत नहीं होने की बात सफेद झूठ है। उन्होंने कहा कि दलाली से संबंधित दस्तावेज खुद बोफोर्स कंपनी ने सीबीआई को दिए थे। हालांकि हिंदुजा भाइयों और क्वात्रोची ने इन दस्तावेजों को सीबीआई को दिए जाने से रोकने के लिए पूरी ताकत लगा दी थी। उन्होंने स्विट्‌जरलैंड की निचली अदालत से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक में अपील की और अंत में स्विट्‌जरलैंड के राष्ट्रपति से गुहार लगाई। लंबी अदालती लड़ाई के बाद सीबीआई इन दस्तावेजों को पाने में कामयाब हुई थी।

जोगिंदर सिंह ने कहा कि बोफोर्स के इन दस्तावेजों में साफ–साफ शब्दों में दलाली में दी गई रकम और इसे लेने वालों के नाम लिखे हैं। इसी आधार पर आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट हुई और क्वात्रोची के लंदन के दो बैंक एकाउंट में जमा 21 करोड़ रुपये को फ्रीज किया गया। उन्होंने कहा कि दिल्ली हाईकोर्ट ने 2005 में हिंदुजा भाइयों को इस आधार पर बोफोर्स मामले में बरी कर दिया कि सीबीआई द्वारा दिए गए दस्तावेज मूल नहीं होकर उसकी फोटोकापी हैं। स्विट्‌जरलैंड सरकार द्वारा सत्यापित दस्तावेजों को फोटोकापी कहकर नकारना हाईकोर्ट की गलती थी और इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील होनी चाहिए थी। लेकिन सरकार ने सीबीआई को इसकी अनुमति नहीं दी।

जोगिंदर सिंह ने कहा कि आज तक किसी ने ये नहीं कहा कि सीबीआई द्वारा स्विट्‌जरलैंड से लाए गए दस्तावेज फर्जी हैं। यदि ये दस्तावेज सही हैं तो फिर इसे कैसे झुठलाया जा सकता है। क्वात्रोची के खिलाफ केस बंद किए जाने के फैसले को दुखद बताते हुए उन्होंने कहा कि हमारी बेबसी ये है कि सार्वजनिक रूप से सच का गला घोंटा जा रहा है, लेकिन हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं।

क्योंकि क्वात्रोची बहुत कुछ जानते हैं: भाजपा

बोफोर्स मामले के आरोपी ओतावियो क्वात्रोची के खिलाफ मामला बंद किए जाने के केंद्र सरकार के फैसले की भाजपा ने तीखी आलोचना की है। पार्टी प्रवक्ता रविशंकर प्रसाद ने कहा है कि यह फैसला इसलिए किया गया है क्योंकि क्वात्रोची काफी कुछ जानते हैं और उन पर कार्रवाई होती तो कई बातें सामने आतीं। इससे यह भी साफ हो गया है कि क्वात्रोची को शुरू से ही ऊपर से संरक्षण हासिल था। यह निर्णय कांग्रेस छवि पर बदनुमा दाग तो है ही, उसकी नीयत पर पर भी सवाल खड़े करता है।

भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि जिस प्रकार सीबीआई ने सुप्रीम कोर्ट में कहा है कि क्वात्रोची के खिलाफ कोई कार्रवाई करने की आवश्यकता नहीं है, वह संप्रग सरकार के उस मंतव्य को स्पष्ट करता है जिसके तहत बोफोर्स घोटाले को हमेशा के लिए दफन कर दिया गया है। यह एक योजना के तहत हुआ है, जिसके कुछ बड़े ही स्पष्ट प्रमाण है। सबसे पहले 2005 में दिल्ली हाईकोर्ट ने एक बहुत ही विवादास्पद में फैसले कहा था कि बोफोर्स मामले में कोई सबूत नहीं है। सीबीआई ने इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में अपील भी नहीं की।

इसके तुरंत बाद एक विवादास्पद विधिक राय के आलोक में लंदन के एक बैंक में जब्त बोफोर्स के पैसे को क्वात्रोची के पक्ष में छोड़ दिया गया। इसके बाद तत्कालीन कानून मंत्री हंसराज भारद्वाज ने एक सार्वजनिक वक्तव्य में कहा कि बोफोर्स मामले में कुछ नहीं है। डेढ़ साल पहले जब अर्जेंटीना में क्वात्रोची को पकड़ा गया था तो प्रत्यर्पण कार्रवाई में सीबीआई ने जानबूझकर कमजोर दलील दी और अपील भी नहीं की। अब यह अंतिम कड़ी है। इस मामले में राजग सरकार द्वारा भी कुछ नहीं किए जाने के सवाल पर प्रसाद ने कहा कि 1998 में हमारे सत्ता में आने तक कोई कार्रवाई नहीं की गई थी। राजग सरकार ने आरोप पत्र दाखिल करना सुनिश्चित किया और मामले को सर्वोच्च न्यायालय ले गई। लेकिन अब कांग्रेस नीत सरकार बोफोर्स मामले के सभी आरोपियों को बचा रही है।

क्वात्रोची प्रकरण : कब क्या

16 अप्रैल 1987 : स्वीडिश रेडियो ने बोफोर्स सौदे में दलाली का खुलासा किया

22 जनवरी 1990 : सीबीआई ने बोफोर्स मामले में प्राथमिकी दर्ज की

1997 : वर्षों के कानूनी दांव–पेंच के बाद स्विस बैंक ने करीब 500 दस्तावेज जारी किए, सीबीआई ने ओतावियो क्वात्रोची और हथियार विक्रेता विन चड्ढा के खिलाफ मुकदमा दायर किया, जिसमें राजीव गांधी और तत्कालीन रक्षा सचिव एस.के. भटनागर समेत कई अन्य का नाम भी शामिल

22 अक्टूबर 1999 : सीबीआई ने मामले में पहला आरोप पत्र दायर किया, इसमें क्वात्रोची, चढड़ा, भटनागर, बोफोर्स के पूर्व प्रमुख मार्टिन अर्दबो और बोफोर्स कंपनी का नाम

9 अक्टूबर 2000 : सीबीआई ने हिन्दुजा बंधुओं का नाम भी आरोपी के तौर पर लिया

.....शेष पृष्ठ 25 पर

नक्सलियों ने स्वीकारा कि हमने मारा, बलिराम ने ललकारा

Nतीसगढ़ के नक्सल प्रभावित क्षेत्र बस्तर से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद बलिराम कश्यप के दो बेटों को संदिग्ध नक्सलियों ने 26 सितम्बर 2009 को गोली मार दी, जिसमें से एक की मौत हो गई। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि कश्यप के दोनों बेटों दिनेश और तनेश पर नक्सलियों ने कई चक्र गोलियां बरसाईं। इस वारदात के समय दोनों बस्तर जिले में महाष्टमी दुर्गा पूजा उत्सव में शिरकत कर रहे थे।' यह वारदात बस्तर के भानपुरी इलाके के एक मंदिर में हुई जो राजधानी रायपुर से करीब 300 किलोमीटर दूर है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि कश्यप पुत्रों के इस मंदिर से निकलने के कुछ देर बाद चार नक्सलियों ने गोलीबारी कर दी। घटना के बाद चारों नक्सली फरार होने में सफल रहे।

पारिवार सूत्रों के मुताबिक गोलियों से छलनी दोनों बेटों को जगदलपुर के महारानी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां तनेश ने दम तोड़ दिया। दिनेश की हालत खतरे से बाहर है। कश्यप चार बार सांसद रहने के अलावा अविभाजित मध्यप्रदेश में मंत्री रह चुके हैं। उनका परिवार वर्षों से नक्सलियों के निशाने पर रहा है। इसका कारण नक्सली आतंक विरोधी आंदोलन सलवा जुडूम के प्रति उनका समर्थन है।

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह बस्तर लोकसभा क्षेत्र के सांसद बलीराम कश्यप से जगदलपुर के शासकीय महारानी जिला अस्पताल में मुलाकात कर उनके स्वास्थ्य का हालचाल पूछा और नक्सल हमले में कल उनके सुपुत्र तानसेन कश्यप की आकस्मिक मृत्यु तानसेन कश्यप की आकस्मिक मृत्यु पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए संवेदना प्रकट की। मुख्यमंत्री के साथ विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक, प्रदेश सरकार के गृहमंत्री ननकी राम कंवर, स्कूल शिक्षा मंत्री बृजमोहन अग्रवाल, पंचायत और ग्रामीण विकास मंत्री रामविचार नेताम, कृषि मंत्री चन्द्रशेखर साहू, नगरीय प्रशासन मंत्री राजेश मूणत, वनमंत्री विक्रम उसेंडी, कांकेर लोकसभा क्षेत्र के सांसद सोहन पोटाई और राज्यसभा सांसद नंदकुमार साय सहित बस्तर संभाग के अनेक जनप्रतिनिधियों ने भी अस्पताल में सांसद कश्यप से मुलाकात की। डॉ. सिंह अस्पताल में करीब एक घंटे तक उनके साथ रहे और डॉक्टरों से भी उनकी सेहत और चिकित्सा के बारे में जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने बलीराम कश्यप से उनकी तबियत को देखते हुए और भी अधिक बेहतर इलाज के लिए रायपुर चलने का आग्रह किया। डॉ. सिंह ने उन्हें शासकी विमान से रायपुर भिजवाया, जहां उन्हें एक निजी अस्पताल में दाखिल कराया गया है। मुख्यमंत्री ने बलीराम कश्यप के जल्द स्वास्थ्य लाभ की कामना की है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री रायपुर से शासकीय विमान द्वारा जगदलपुर के लिए रवाना हुए। विधानसभा अध्यक्ष कौशिक और मंत्रीगण सर्वश्री ननकीराम कंवर, बृजमोहन अग्रवाल, रामविचार नेताम और राजेश मूणत भी उनके साथ जगदलपुर गए। डॉ. सिंह ने वहां हवाई पट्टी से सीधे अस्पताल पहुंचकर सांसद कश्यप के गृहग्राम

फरसागुड़ा के लिए रवाना हो गए। मुख्यमंत्री ने वहां पहुंचकर कश्यप के शोक संतप्त परिवारजनों से मुलाकात कर सांत्वना प्रदान की। डॉ. सिंह ने कहा कि कश्यप परिवार के इस दुख की घड़ी में हम सब उनके साथ है। नक्सलियों की इस शर्मनाक कायराना हरकत की छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश में आम जनता एक स्वर से निंदा कर रही है। मुख्यमंत्री ने फरसागुड़ा में सांसद पुत्र द्वय प्रदेश सरकार के लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री केदार कश्यप और जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक जगदलपुर के अध्यक्ष दिनेश कश्यप से भी मुलाकात की। डॉ. सिंह ने दिनेश कश्यप के स्वास्थ्य का हाल–चाल पूछा। दिनेश कश्यप कल की घटना में घायल हो गए थे। ■

नक्सलवाद के खात्मे को लेकर हर कुर्बानी देने को तैयार: बलीराम कश्यप

भाजपा सांसद श्री बलीराम कश्यप ने अपने पुत्र तानसेन कश्यप की नक्सलियों द्वारा हत्या किए जाने के बाद अपने संकल्प को दोहराते हुए कहा, 'भले ही मुझे नक्सली आतंकवाद के खिलाफ अपना सर्वस्व न्योछावर क्यों न करना पड़े लेकिन वे किसी कीमत पर संघर्ष से पीछे नहीं हटेंगे।' यह बात श्री कश्यप ने भाजपा के राष्ट्रीय सचिव व सांसद श्री प्रभात झा से कही। श्री झा शोकाकुल कश्यप परिवार से मिलने छत्तीसगढ़ प्रवास पर आए थे। श्री कश्यप ने कहा कि नक्सली आदिवासियों का शोषण करने में जुटे हैं इसलिए वे नक्सलवाद के खिलाफ संघर्ष करते रहेंगे। उन्होंने जोर देकर कहा, 'नक्सली कायरतापूर्ण कार्रवाई करके हमारे संकल्प और हौसले को डिगा नहीं सकते। हम नक्सली आतंकवाद के खात्मे को लेकर हर कुर्बानी देने को तैयार हैं।' श्री प्रभात झा ने नक्सलियों द्वारा तानसेन कश्यप की गई हत्या की तीव्र शब्दों में निंदा करते हुए कहा कि नक्सली आतंकवाद के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़नी होगी। श्री झा ने बलीराम कश्यप के साहस और समर्पण की तारीफ करते हुए कहा कि वे नक्सलवाद के खिलाफ लंबे समय से संघर्ष करते आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि नक्सलवाद पर काबू पाना बहुत जरूरी हो गया है। इसके लिए राज्य और केन्द्र सरकार को मिलकर संयुक्त कार्रवाई करनी चाहिए।

मूल्य वृद्धि का कारण खाद्य-अर्थव्यवस्था का घोर कुप्रबंधन : भाजपा

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता तथा संसद सदस्य रविशंकर प्रसाद द्वारा जारी प्रेस वक्तव्य

rh न वर्ष से भी अधिक समय से खाद्यान्नों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं के मूल्यों में लगातार वृद्धि हो रही है, फिर भी संप्रग सरकार इस पर काबू पाने में पूरी तरह विफल रही है। जाहिर है कि खाद्य अर्थव्यवस्था के इस घोर कुप्रबंधन से सबसे अधिक आहत आम आदमी हुआ है। हैरत की बात है कि यह सब तब हो रहा है जब लगभग साढ़े पांच वर्ष से डॉ. मनमोहन सिंह जैसे सुपरिचित अर्थशास्त्री देश के प्रधानमंत्री हैं। स्मरण रहे कि राजग सरकार ने वर्ष 2004 में अपने पीछे सरप्लस की खाद्य व्यवस्था छोड़ी थी, जो संप्रग शासन के अधीन अब अभावों की अर्थव्यवस्था बनकर रह गई है। यह गर्व के साथ याद किया जा सकता है कि देश में राजग शासन के दौरान 2002–03 में 14 राज्यों में भीषणतम सूखा के बावजूद खाद्य अर्थव्यवस्था को कुशलतापूर्वक प्रबंधित किया गया था, जिसके फलस्वरूप 2002–03 के दौरान देश में उच्च स्तरीय मात्रा में बफर स्टॉक मौजूद था। स्थिति इतनी सुखद थी कि खाद्य वस्तुओं को सस्ते और युक्तियुक्त मूल्यों पर प्रचुरता से उपलब्ध कराए जाने के अतिरिक्त 7,000 करोड़ रूपए के मूल्य के खाद्यान्न विश्व के 25 देशों को निर्यात किए गए थे। जब राजग 1998–99 में सत्ता में आया था, तब खाद्य उत्पादन 204 मिलियन टन था, जो 2003–04 में बढ़कर लगभग 220 मिलियन टन हो गया। मई, 2004 में जब राजग ने शासन छोड़ा था तब का विभिन्न खाद्य और अन्य आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों का चार्ट और अप्रैल, 2008 में (जब संप्रग I सत्ता में था) तथा सितंबर 2009 में (संप्रग II के शासन काल के दौरान) का खाद्य और अन्य आवश्यक वस्तुओं का चार्ट इस वक्तव्य के साथ संलग्न है, जो दर्शाता है कि आवश्यक वस्तुओं के मूल्य बिना कम हुए लगातार बढ़ रहे हैं और सरकार उन पर नियंत्रण पाने में असहाय बनी हुई है।

खाद्य कुप्रबंधन की सरकारी दस्तावेजों से पुष्टि

वस्तुतः खाद्य अर्थव्यवस्था का कुप्रबंधन अधिकृत सरकारी दस्तावेजों से स्पष्ट होता है तथा इनमें तथ्यों को या तो बढ़ा–चढ़ाकर बताया जा रहा है या शासकीय कुप्रबंधन लोगों की बलि ले रहा है। जैसाकि सर्वज्ञात है खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग की वर्ष 2008–09 की वार्षिक रिपोर्ट छुपाने की अपेक्षा उजागर अधिक कर रही है। उक्त रिपोर्ट के पृष्ठ 38 पर पैरा 3.29 में एक चार्ट का उल्लेख है, जिसमें 1 जनवरी, 2002 से लेकर 1 अप्रैल, 2009 तक के न्यूनतम बफर मानकों के मुकाबले केन्द्रीय पूल में गेहूं और चावल की स्टॉक पोजीशन दी गई है। इससे देखा जा सकेगा कि राजग शासन के दौरान गेहूँ और चावल की वसूली और स्टॉक संप्रग के रिकार्ड की तुलना में कहीं अधिक अच्छा था (संलग्नक II)। आश्चर्य है कि उसी वार्षिक रिपोर्ट के पेज 39 के पैरा 3.30 के अधीन समग्रावलोकन शीर्षक के अधीन दावा किया गया है कि जनवरी, 2009 में खाद्यान्नों की स्टॉक स्थिति 361.89 लाख टन थी। आगे यह भी दावा किया गया है कि 2008–09 में केन्द्रीय पूल में सार्वजनिक वितरण प्रणाली और कल्याणकारी स्कीमों की जरूरतों को पूरा करने के लिए गेहूं और चावल का पर्याप्त स्टॉक है।

वस्तुतः, सरकार के रिकार्ड के अनुसार देश में 171 लाख टन के बफर खाद्य सुरक्षा मानकों की तुलना में 1 जुलाई, 2009 को देश के पास 329 लाख टन गेहूं का स्टॉक था। इसी प्रकार, 98 लाख टन की बफर आवश्यकता के मुकाबले 196 लाख टन चावल रिजर्व स्थिति में था। यह रिकार्ड पर है कि खाद्य और सिविल आपूर्ति मंत्री श्री शरद पवार ने ससंद में दावा किया था कि खाद्यान्नों का उत्पादन रिकार्ड उच्च मात्रा में हुआ है, जिसका कांग्रेस पार्टी ने धुंआधार प्रचार किया था। यदि यह स्थिति है तो अभाव की स्थिति क्यों बनी हुई है और सब्जियों, खाद्यान्नों, दूध और मसालों आदि सहित आवश्यक खाद्य वस्तुओं के दाम क्यों बढ़ते जा रहे हैं। निष्कर्ष स्पष्ट है कि या तो तथ्य उजागर नहीं किए जा रहे हैं या यह घोर कुप्रबंधन का मामला है।

सटोरियों और खाद्य व्यापारियों को लाभ पहुंचाने के लिए की गई घोषणा

एक ओर जहां सरकार यह दावा कर रही है कि खाद्य उत्पादन और भंडारण की स्थिति सुखद है, वहीं मंत्री और अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी द्वारा समय–समय पर घोषणाएं की जाती है कि कमी के कारण इन वस्तुओं का आयात किया जाएगा। गेहूं का पर्याप्त स्टॉक होने के दावे के बावजूद आस्ट्रेलिया सहित बाहरी देशों से घटिया गेहूं काफी अधिक मूल्यों पर आयातित किया गया, जबकि भारतीय किसानों को गेहूं का

> *भारतीय जनता पार्टी अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री से मूल्यों पर काबू पाने के तत्काल समुचित उपाय करने का आग्रह करती है अन्यथा भावी पीढ़ी का उनके प्रति रूख कड़ा हो जाएगा। भाजपा संसद के अंदर तथा बाहर पूरे देश में मूल्य वृद्धि के विरूद्ध अपनी लड़ाई शिद्दत से जारी रखेगी।*

काफी कम मूल्य दिया गया। जब दालों के मूल्यों में भारी वृद्धि हो रही थी तब सभी निर्देशों की अनदेखी करते हुए सरकार की शह पाने वाले बेइमान निर्यातकों को भारतीय दालों को निर्यात करने की छूट दे दी गई ताकि वे भारी मुनाफा कमा सकें भारतीय जनता पार्टी ने जब यह मामला उठाया तभी जाकर इसकी सीबीआई जांच शुरू की गई।

हाल ही में, कृषि मंत्री श्री शरद पवार ने अंतर्राष्ट्रीय चीनी बाजार में यह कहकर तूफान खड़ा कर दिया कि भारत चीनी का आयात करेगा। भारत विश्व में चीनी के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। इस घोषणा से अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में चीनी मूल्य 24 प्रतिशत बढ़ गए तथा देश को इस आयात के लिए भारी मूल्य चुकाना पड़ा।

जनवरी, 2009 में जहां चीनी 2100 रूपए प्रति क्विटल बिक रही थी वहीं अब सितंबर, 2009 में 3500 रूपए प्रति क्विटल बिक रही है। परिणामतः, चीनी 35 रूपए प्रति किलोग्राम और गुड़ 32 रूपए प्रति किलोग्राम की दर पर बिक रहा है और आम आदमी मिठास से वंचित हो गया है।

भाजपा का आरोप है कि केन्द्रीय मंत्रियों और अन्य उच्च पदाधिकारियों के सामूहिक संरक्षण में घरेलू और विदेशी कंपनियां निर्देश दे रही हैं कि खाद्य पदार्थ कब, कितनी मात्रा में और किन परिस्थितियों में आयातित किए जाएंगे तथा आयात या निर्यात पर कब रोक लगाई जाएगी। सरकार ने अपनी राजनीतिक इच्छाशक्ति को दलालों, बिचौलियों, खाद्यान्न व्यापारियों तथा जखीरेबाजों के सम्मुख समर्पित कर दिया है तथा आम आदमी के साथ सबसे बड़ा छल किया जा रहा है।

रिजर्व बैंक और योजना आयोग तक ने आशंका व्यक्त की है कि वर्ष 2009 के दौरान खाद्यान्नों के मूल्य 10 प्रतिशत – 15 प्रतिशत तक बढ़ सकते है। भारतीय जनता पार्टी अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री से मूल्यों पर काबू पाने के तत्काल समुचित उपाय करने का आग्रह करती है अन्यथा भावी पीढ़ी का उनके प्रति रूख कड़ा हो जाएगा। भाजपा संसद के अंदर तथा बाहर पूरे देश में मूल्य वृद्धि के विरूद्ध अपनी लड़ाई शिद्दत से जारी रखेगी।■

lçx ljdkj d 'kkludky e fofHké vko';d oLrqvk dh vlkekU; eY; of) dk pkV

Ø-l	uke	eY; ¼:i;s çfr fdyk½ ,uMh, ¼eb] 2004½	eY; ¼:i;s çfr fdyk½ ;ih, ¼vçSy] 2008½	eY; ¼:i;s çfr fdyk½ ;ih, ¼flrEcj] 2009½
1.	गेंहू	9	16–22	16–22
2.	आटा	10	16–18	16–25
3.	चावल	10	25–32	25–35
4.	ब्रेड	8	15	17
5.	चीनी	14	22	35
6.	चाय	80	150–200	150–280
7.	मूंग दाल	24	50	75–80
8.	अरहर दाल	26	38	80–85–90
9.	मसूर दाल	22	35	55–68
10.	चना दाल	25	42	45–50
11.	राजमा	28	56	60–70
12.	बेसन	20	50	60–65
13.	सरसों का तेल	30–35	80–92/लीटर	80–92/लीटर
14.	आलू	2–5	8–10	20–35
15.	देसी घी	110–120	160-165	280-290
16.	दूध	14/लीटर	24/Ltr.	26/लीटर
17.	एलपीजी गैस	244	295	325–280/ *सिलेंडर ¼40 :- lfClMh½*
18.	पैट्रोल	24/लीटर	45.92/लीटर	44.63/लीटर
19.	डीज़ल	22–50/लीटर	33/लीटर	32.82/लीटर
20.	सीएनजी	14–18/लीटर	19.10/लीटर	21/लीटर
21.	सीमेंट	125/बैग	235–260/बैग	260–320/बैग
22.	स्टील	23000/टन	50,000/टन	44,000/टन
23.	ईंट	रू 1800/1000Nos	3000/1000	3000-3800/1000
24.	सोना	4,500–5,000/10 ग्राम	13,000/10 ग्राम	15,860/10 ग्राम
25.	चांदी	8,000–9,000/किलो	23,400/किलो	26,994/किलो

भाजपा का घोषणा-पत्र जारी

महंगाई होगा मुख्य चुनावी मुद्दा : अरुण जेटली

pडीगढ़, 29 सितंबर पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं राज्यसभा में भाजपा के विपक्ष के नेता श्री अरूण जेटली ने कहा है कि हरियाणा विधानसभा चुनावों में महंगाई मुख्य मुद्दा रहेगी। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र और अरूणाचल प्रदेश के चुनावों में भी भाजपा इस मुद्दे को जोर–शोर से उठाएगी। देश की आंतरिक सुरक्षा और आतंकवाद से निपटने के मामले में यूपीए सरकार पूरी तरह से विफल रही है। श्री जेटली मंगलवार को चंडीगढ़ प्रेस क्लब में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। इस मौके पर उन्होंने हरियाणा भाजपा का चुनावी घोषणा पत्र भी जारी किया। पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं हरियाणा मामलों के प्रभारी सर्वश्री विजय गोयल, सहप्रभारी सरदार हरजीत सिंह ग्रेवाल, प्रदेशाध्यक्ष कृष्णपाल गुर्जर, पूर्व सांसद रतनलाल कटारिया, घोषणा पत्र कमेटी के चेयरमैन रामचंद्र जांगड़ा तथा पंचकूला से भाजपा प्रत्याशी ज्ञानचंद गुप्ता भी मौजूद थे।

श्री जेटली ने कहा कि पांच माह पूर्व हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने बड़ी–बड़ी घोषणाएं की थीं। यूपीए सरकार के सत्ता में आने के बाद से ही जिस तरह से महंगाई में बढ़ोतरी हुई है, उससे आम आदमी बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। पिछले दिनों हुए उपचुनावों से यह तस्वीर भी साफ हो गई कि महंगाई का विरोध करना लोगों ने शुरू कर दिया हैं भाजपा के मुकाबले कांग्रेस का बड़ा शर्मनाक प्रदर्शन रहा। श्री जेटली ने कहा कि हरियाणा में सभी नब्बे सीटों पर चुनाव लड़ने का फैसला भाजपा ने प्रदेश में अपने आप को मजबूत करने के लिए किया है। भाजपा वैकल्पिक राजनीति संस्कृति हरियाणा की राजनीति में लाना चाहती है। अगले 12 दिनों में भाजपा व्यापक स्तर पर प्रदेश में चुनाव प्रचार करेगी। श्री लालकृष्ण आडवाणी, श्री राजनाथ सिंह, श्रीमती सुषमा स्वराज और भाजपाशासित प्रदेशों के मुख्यमंत्री सहित बड़ी संख्या में दिग्गज नेता चुनाव प्रचार के लिए आएंगे।

उन्होंने कहा कि आज तब देश और दुनिया मंदी के दौर से गुजर रहे हैं तो ऐसे में आवश्यक चीजों की कीमतों में कमी की बजाय यूपीए सरकार लगातार बढ़ोतरी कर रही है। एक ऐसा विचित्र आर्थिक संकट यूपीए सरकार लाई है, जिससे हर वर्ग परेशान है। उन्होंने कहा कि आतंकवाद के मामले में भी यूपीए सरकार पूरी तरह से विफल साबित हुई है। नरम नीतियों के कारण पाकिस्तान सीना चौड़ा करके खड़ा है। अंतरराष्ट्रीय दबावों में आकर देश की सुरक्षा और विदेश नीति के समझोते किए जा रहे हैं। आतंक चलता रहे फिर भी बातचीत का दौर जारी है। हालात यह है कि पाकिस्तान ने भारत के प्रति अपना रवैया कड़ा कर लिया है।

हरियाणा सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए श्री जेटली ने कहा कि प्रदेश में क्षेत्रवाद और जातपात को बढ़ावा हुड्डा सरकार ने दिया है। ऐसा लगता है जैसे हुड्डा दो ही जिलों के मुख्यमंत्री हैं, बाकी प्रदेश से उन्हें कोई सरोकार नहीं है। पूरे प्रदेश का पैसा अपने इलाके में लगा दिया है। श्री गोयल ने कहा कि इस भेदभाव को भी भाजपा चुनावी मुद्दा बनाएगी। एक सवाल के जवाब में विपक्ष के नेता ने कहा कि पंजाबी भाषा को मान्यता देना भाजपा की प्राथमिकता है। अगर भाजपा की सरकार प्रदेश में बनती है तो यहां के पंजाबियों का मान–सम्मान बहाल किया जाएगा। इनेलो और अकाली गठबंधन को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में जेटली ने कहा कि अकाली दल एनडीए का हिस्सा है। भाजपा के साथ प्रदेश स्तर पर समझौता न हो, इस तरह के पहले भी कई उदाहरण हैं। ऐसे में प्रदेश स्तर के गठबंधनों से एनडीए पर असर नहीं पड़ेगा। महिलाओं को राजनीति में 33 प्रतिशत आरक्षण देने के मुद्दे पर श्री जेटली ने स्वीकारा कि टिकट वितरण में भाजपा इस पर खरी नहीं उतर पाई है।

इस मौके पर हरियाणा मामलों के प्रभारी श्री विजय गोयल ने कहा कि पूरी तरह से व्यावहारिक घोषणा पत्र भाजपा ने जारी किया है। हुड्डा की तरह केवल घोषणाओं में भाजपा विश्वास नहीं रखती। सभी वर्गों को रियायतें भाजपा सरकार सत्ता में आने पर देगी। उन्होंने कहा कि बिजली–पानी, कानून व्यवस्था, शिक्षा और स्वास्थ्य पर मुख्य फोकस रहेगा। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात और हिमाचल प्रदेश जैसी विकासशील सरकार वे हरियाणा में देंगे। श्री गोयल ने कहा कि जब–जब कांग्रेस की सरकार केन्द्र और राज्य की सत्ता में आई है, हालात बिगड़े हैं।

भाजपा ही दे सकती है सुशासन : प्रो. रामबिलास शर्मा

पूर्व शिक्षा मंत्री व भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता प्रो. रामबिलास शर्मा ने कहा कि प्रदेश में सुशासन केवल भाजपा ही दे सकती है। पार्टी की सरकार बनाने के लिए बढ़–चढ़कर भाजपा को वोट दें।

श्री शर्मा 4 अक्टूबर को गांव बाघोत में अटेली से पार्टी प्रत्याशी संतोष यादव के पक्ष में एक चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस द्वारा किए गए सभी वायदे खोखले निकले। कांग्रेस ने महेन्द्रगढ़ में केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोलने के सब्जबाग लोगों को दिखाए, लेकिन भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने यह विश्वविद्यालय महेन्द्रगढ़ में न खोलकर रोहतक में खोल दिया। कांग्रेस की गलत नीतियों के चलते क्षेत्र के युवा बेरोजगार घूम रहे हैं। उन्होंने कहा

कि प्रदेश में भाजपा सरकार बनने पर बेरोजगारों को 3000 रूपए भत्ता दिया जाएगा। श्री शर्मा ने कहा कि संतोष यादव इलाके की बेटी हैं। एचपीएससी की सदस्य रहते हुए इन्होंने क्षेत्र के काफी लोगों को रोजगार दिया। अटेली में अनेक विकास कार्य करवाए। यदि इस बार उन्हें मौका मिला तो वे और अधिक विकास क्षेत्र में करवाएंगी। इस मौके पर संतोष यादव ने कहा कि इलाके के युवाओं को अधिकाधिक रोजगार दिलवाना और अटेली क्षेत्र में पीने के पानी की समुचित व्यवस्था करवाना उनका लक्ष्य है। चाहे पानी भाखड़ा डैम से या यमुना से ही क्यों न लाना पड़े। यदि वे विधायक बनी तो इलाके के जोहड़–तालाबों व नहरों को पानी से लबालब भरवा देगी। श्रीमती यादव ने कहा कि पिछले पांच सालों से अटेली का विकास अवरूद्ध पड़ा है।

इसका कारण वे जनप्रतिनिधि हैं, जो झूठे वादों के बल पर एम.एल.ए. तो बन जाते हैं, लेकिन उसके बाद क्षेत्र में ढूंढे से नहीं मिलते। ऐसे झूठे व अवसरवादी लोगों को आप 13 अक्टूबर को सबक सिखाएं व भाजपा को वोट दे कर सत्ता में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। इस अवसर पर उनके साथ खेतड़ी के पूर्व विधायक दाताराम गुर्जर, बहरोड के विधायक डा. जसवंत सिंह, अजीत यादव, विजय चेयरमैन, सुगन चंद सैनी, सुरेश अत्री, मुन्नीलाल, कैलाश पुजारी बाघोत, संतोष गुर्जर, सतबीर यादव सेहलंग, सत्यवीर नौताना, राधेश्याम शर्मा झाड़ली, धर्मपाल धनखड़ छितरोली, मुन्नीलाल साबह, शिव कुमार भोजावास, राजेन्द्र सिंह, ओमप्रकाश कनीना, विनोद अग्रवाल, रूपचंद पहलवान पोता, रामानंद मिस्त्री, ठाकुर रतनलाल, वेदप्रकाश शर्मा, जयसिंह पोता, संतोष देवी नौताना, शांति देवी, नेतराम सरपंच, विजयपाल नम्बरदार आदि भी उपस्थित थे। ■

मतदान के माध्यम से कांग्रेस सरकार को उखाड़ फेंके

पूर्व केन्द्रीय मंत्री व सांसद हुक्मदेव नारायण यादव ने कहा है कि कांग्रेस ने सदैव वंशवाद की राजनीति कर देश को बांटने का काम किया है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने पर देश को वंशवाद के कलंक से मुक्ति कर विकास के पथ पर अग्रसर किया जाएगा।

श्री यादव 6 अक्टूबर को गांव दौंगड़ा अहीर में भारतीय जनता पार्टी की अटेली हलके से उम्मीदवार श्रीमती संतोष यादव के पक्ष में चुनावी रैली को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी के नेता केवल अपना और अपने परिवार का भला करना जानते हैं। प्रदेश में टिकट वितरण मे भी पार्टी ने केवल विशेष परिवार वालों को ही टिकटें दी हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश के विकास के लिए कांग्रेस का विनाश जरूरी है। हरियाणा की जनता के पास यह मौका आया है कि 13 अक्टूबर को मतदान के माध्यम से कांग्रेस सरकार को उखाड़ें और बहन संतोष यादव को जिताकर अटेली को वास्तव में नंबर वन बनवाएं।

अपने संबोधन में श्रीमती संतोष यादव ने कहा कि कांग्रेस सरकार किसनों को बर्बाद करने पर तुली हुई है। मानसून की बेरुखी से त्रस्त किसानों को कम बिजली व पानी देकर सरकार ने किसानों की कमर तोड़ने का काम किया है। उन्होंने कहा कि हुड्डा सरकार ने अपने चार साल के शासन में अटेली जैसे क्षेत्र में विकास की एक ईंट भी नहीं लगवाई।

श्रीमती यादव ने जनता से आह्वान किया कि वे विपक्षी दलों के बहकावे में न आकर भाजपा के पक्ष में मतदान करें, ताकि इलाके का समुचित विकास हो सके। इस मौके पर बहरोड़ राजस्थान के विधायक डॉ. जसवंत यादव, सुगनचंद सैनी, अजीत यादव, सुरेश शर्मा सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। ■

भाजपा-शिवसेना का चुनावी घोषणापत्र

शिवसेना और भारतीय जनता पार्टी ने सोमवार को दशहरे के शुभ मुहूर्त पर अपना चुनावी घोषणापत्र जारी किया। 24 पृष्ठ के इस घोषणापत्र में किसानों को 4 फीसदी की दर से कर्ज देने के साथ ही मुंबई की पेयजल और बिजली की समस्या को पूरी तरह खत्म करने के साथ दसवीं तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा देने का आश्वासन दिया गया है।

शिवसेना कार्यवाहक अध्यक्ष उद्धव ठाकरे ने बताया कि घोषणापत्र तैयार करने के लिए जनता से सूचनाएं मंगवाई गई थीं। देश–विदेश से मिली सूचनाओं के आधार पर ही शिवसेना–भाजपा ने यह घोषणा–पत्र तैयार किया है। शिवसेना भवन में आयोजित समारोह में उद्धव ठाकरे के साथ भाजपा नेता गोपीनाथ मुंडे, नितिन गडकरी, रामदास कदंब, मनोहर जोशी के साथ कई नेता और कार्यकर्ता उपस्थित थे। 'माझे सरकार माझा वचननामा' नाम से बनाए गए इस घोषणापत्र का विमोचन करने के बाद उद्धव ठाकरे ने कहा कि हमारे घोषणापत्र में किसी तरह की प्रिंटिंग मिस्टेक नहीं हैं और हमने खोखले दावे नहीं किए हैं। हमने यह नहीं कहा है कि हम चांद से पानी लाकर राज्य की जनता को देंगे। हमने वही आश्वासन दिया है जो हम पूरे कर पाएंगे। सत्ता आने के बाद मंत्रालय में इन आश्वासनों को पूरा करने के लिए एक अलग विभाग की स्थापना की जाएगी। शिवसेना और भारतीय जनता पार्टी ने दशहरे के शुभ मुहूर्त पर अपना चुनावी घोषणापत्र जारी किया। 24 पृष्ठ के इस घोषणापत्र में किसानों को 4 फीसदी की दर से कर्ज देने के साथ ही मुंबई की पेयजल और बिजली की समस्या को पूरी तरह खत्म करने के साथ दसवीं तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा देने का आश्वासन दिया गया है।

पथ प्रदर्शक प्यारेलालजी

संगठन, संरचना व संघर्ष जैसे आदर्श के संवाहक प्यारेलाल खण्डेलवालजी का निधन हो गया। वे सहजता, सरलता और सादगी के प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में अपने व्यक्तित्व और कृतित्व की एक अलग छाप छोड़ी। सिद्धांतों से समझौता न करने वाले प्यारेलालजी ने जो आयाम स्थापित किए हैं वे हम सभी के लिए स्मरणीय ही नहीं, अनुकरणीय भी है।

प्यारेलालजी ने बाल्यकाल से ही देश की स्वतंत्रता के लिए और फिर समाज और राष्ट्रनिर्माण के लिए आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने अपने जीवन का क्षण–क्षण व शरीर का कण–कण राष्ट्र और समाज निर्माण के लिए न्यौछावर कर दिया।

1940 में संघ के स्वयंसेवक के रूप में समाज सेवा का व्रत लेने वाले प्यारेलालजी ने 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभायी। विद्यार्थी जीवन में ही भूमिगत आंदोलनकारियों द्वारा तैयार की गई प्रचार सामग्री को जनता में वितरित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। फिर 1953 का जम्मू–कश्मीर आंदोलन हो या आपातकाल का विरोध या राष्ट्रहित व जनहित में समय–समय पर आयोजित होने वाले, सत्याग्रह, आंदोलन, धरना और प्रदर्शन वे जीवन भर अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करते रहे।

वे सादा जीवन – उच्च विचार के सच्चे अनुयायी थे। उनके जीवन में त्याग, तपस्या, श्रद्धा, शुचिता, प्रामाणिकता, नैतिकता, सहजता, सरलता, धैर्य निष्ठा सभी गुण एक साथ देखने को मिलते थे।

जनसंघ हो या भाजपा हो, शून्य से शिखर तक और नींव से कलश तक के निर्माण में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। वे नींव की पत्थर की तरह धैर्यवान बने रहे। मध्यप्रदेश से संगठन कार्य प्रारंभ करने वाले प्यारेलालजी कुशल संगठनकर्ता, आदर्श राजनीतिक कार्यकर्ता और देश के लाखों कार्यकर्ताओं

प्यारेलाल खंडेलवाल पंचतत्व में विलीन

भाजपा के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सदस्य प्यारेलाल खण्डेलवाल का 6 अक्टूबर को दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में निधन हो गया। 86 साल के खण्डेलवाल कैंसर से पीडित थे। एम्स में लाने के पहले उनका राममनोहर लोहिया अस्पताल में लम्बे समय तक इलाज चला था। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री समेत कई शीर्ष नेताओं ने खंडेलवाल को श्रद्धांजलि दी। मध्यप्रदेश में भाजपा व जनसंघ के विस्तार में अहम भूमिका निभाने वाले प्यारेलालजी का जन्म सीहोर के चारमंडली गांव में 1929 में हुआ था। वह बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े थे। भाजपा में वह राष्ट्रीय उपाध्यक्ष समेत कई पदों पर रहे। 1980 में वे पहली बार राज्यसभा के लिए चुने गए।

इसके बाद 1989 के संसदीय चुनाव में वह राजगढ़ संसदीय क्षेत्र से दिग्विजय सिंह को हराकर लोकसभा में पहुंचे। उन्हें 2004 में दोबारा राज्यसभा के सदस्य के रूप में चुना गया। खण्डेलवाल संसद की कई समितियों के सदस्य भी रहे। उनके निधन की खबर मिलते ही पार्टी मुख्यालय पर पार्टी के कई नेता और सांसद का जमा होने लगे। दोपहर को 12 बजे विशेष विमान से उनका पार्थिव शरीर भोपाल लाया गया।

इसके पहले प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, उप राष्ट्रपति मोहम्मद हामिद अंसारी, लोकसभा उपाध्यक्ष करिया मुंडा, लोकसभा में विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी, पार्टी अध्यक्ष राजनाथ सिंह, विदिशा से सांसद सुषमा स्वराज, मप्र के पूर्व मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवाए पार्टी के राष्ट्रीय सचिव प्रभात झा, जबलपुर के सांसद राकेश सिंह, सांसद माया सिंह आदि ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। आडवाणी ने खण्डेलवाल को कुशाभाऊ ठाकरे की तरह मध्यप्रदेश में पार्टी के प्रमुख शिल्पियों मे से एक बताते हुए कहा कि उनका स्थान भर पाना असम्भव है।

राजकीय सम्मान के साथ अंत्येष्टि

खण्डेलवाल का पार्थिव शरीर भोपाल पहुंचने पर अंतिम दर्शन के लिए भाजपा कार्यालय में रखा गया। शाम को भदभदा स्थित विश्राम घाट में राजकीय सम्मान के साथ उनकी अंत्येष्टि की गई। इस दौरान मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, राष्ट्रीय संगठन महामंत्री रामलाल, पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर समेत कई मंत्री, सांसद, विधायक मौजूद थे।

को प्रेरणा देने वाले पथ प्रदर्शक थे। उन्होंने एक आदर्श और प्रेरणादायी जीवन बिताया और वे पार्टी तथा राष्ट्र के हित में पूरी तरह अर्पित रहे।

राजनीति के सभी खण्डों और समाज के सभी वर्गों के मध्य उनकी लोकप्रियता सर्वथा अटूट थी और अपनी तपस्यामयी जीवन से वे सभी के श्रद्धेय बन गए थे। खण्डेलवालजी के सम्पर्क में देश के लाखों कार्यकर्ता आए व सभी के अपने थे। सभी को लगता था कि प्यारेलालजी उनके है। उन्हें उसी में आनंद मिलता था वे प्रवास में विश्वास करते थे। वे लोकभ्रमण करते हुए जनमानस को समझने का सदैव प्रयास करते रहे। वे अपने विवेक को अखंड रखते हुए जागृत भाव में रहने पर विश्वास रखते थे।

वे दृढ़ संकल्पी व्यक्ति थे। वे अहर्निश कार्य में जुटे रहे। जो ठान लेते थे, उसे पूरा करके ही दम लेते। वे सभी कार्य को विरक्त भाव से करते रहे। उन्होंने स्वयं के बारे मे कभी विचार नहीं किया। वे वैराग्यभाव से अंतिम क्षणों तक जन सेवा रूपी तपस्या में लीन रहे। वे जीवनभर निस्पृहता से जुड़े रहे।

लोकसभा में विपक्ष के नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी एवं भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने शोक संदेश में कहा –

स्वर्गीय प्यारे लाल खंडेलवाल
सदस्य – राज्य सभा
के प्रति श्रद्धांजलि

श्री प्यारेलालजी जनसंघ के जमाने से लेकर आज तक पार्टी के एक निष्ठावान, समर्पित कार्यकर्ता रहे।
उनकी कर्मठता व तपस्या के कारण ही मध्य प्रदेश राज्य पार्टी का [illegible] के मामले का एक अति प्रभावी [illegible] बना रहा।
मैं उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उनके सभी परिवार जनों को संवेदना अर्पित करता हूं। प्रभु से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में [illegible] दें।

लाल कृष्ण आडवाणी
6.10.09

श्री प्यारेलाल जी खंडेलवाल मध्यप्रदेश की जनसंघ एवं भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख शिल्पी थे। [illegible] अपनी व्यवहार कुशलता से पार्टी का [illegible] विस्तार किया। वैचारिक प्रतिबद्धता तो थी ही, अद्भुत संगठक भी थे। [illegible]
मैं अपनी तरफ से एवं पार्टी की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, उनके परिजनों एवं शुभचिंतकों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं, ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

राजनाथ सिंह
06.10.09

अटल बिहारी वाजपेयी
पूर्व प्रधान मंत्री

शोक संदेश

श्री प्यारे लाल खंडेलवाल जी के दुःखद निधन का समाचार मिला। श्री खंडेलवाल जी जनसंघ व भारतीय जनता पार्टी के कार्य की नींव डालने और उसे बढ़ाने वाले प्रमुख कार्यकर्ताओं मे से एक थे। विशेषकर मध्य प्रदेश में आज पार्टी का जो रूप दिखता है उसमें श्री खंडेलवाल जी का उल्लेखनीय योगदान है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सम्पर्क में आने के बाद उन्होंने अपने जीवन को ही मिशन बना लिया। जीवन भर ध्येय के प्रति समर्पित होकर कैसे कार्य किया जाता है श्री प्यारे लाल खंडेलवाल जी उसके उदाहरण थे।

ऐसे समर्पित, कर्मठ और निष्ठावान सहयोगी के निधन पर लगा आघात शब्दों में व्यक्त करना असंभव है। मैं दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने और उनके परिजनों व सहयोगियों को यह दुःख सहने की शक्ति देने की प्रार्थना करता हूँ।

नई दिल्ली
6 अक्तूबर 2009

6A, Krishna Menon Marg, New Delhi 110011 India
Tel : +91 11 23015308, 23793877 Fax : +91 11 23794612

वे नम्र थे, विनम्र थे, पर इसका अर्थ यह नहीं कि गलत तथ्यों का विरोध न करें। वे अपनी बात दृढ़ता से रखते थे। अपने मत को रखने में कभी पीछे नहीं रहते थे।

प्यारेलालजी वास्तव में वर्तमान राजनीति में भी अपने संयमित व शांतियुक्त आचरण व लोकव्यवहार से जुड़े रहे। वे गलाकाट राजनीति की दौड़ में भी पर्व की पवित्रता लिए लोगों से मिलते। वे कभी किसी से अपेक्षा नहीं रखते थे और न ही किसी की उपेक्षा करते थे। परोपकारी भाव से सदैव जीवन साधना मे रत प्यारेलालजी, अपने आचरण व व्यवहार से कार्यकर्ताओं में परिवर्तन लाने का प्रयत्न करते रहे।

प्रचारक वृत्ति के प्रति समर्पित व्यक्तित्व के धनी प्यारेलाल जी का पूरा जीवन नैतिकता और प्रामाणिकता की वह मिसाल है जो केवल भाजपा ही नहीं बल्कि सभी राजनैतिक दल के कार्यकर्ताओं को सदैव प्रेरणा देता रहेगा। उनके द्वारा स्थापित आदर्श और प्रतिमान कार्यकर्ताओं के लिए हमेशा अनुकरणीय रहेगा। वे सशरीर हम सभी के बीच भले ही न रहे हों पर अपने विचारों व आचरण के साथ सदैव उपस्थित रहेंगे। उनका व्यक्तित्व व कृतित्व हमेशा हम सभी का मार्गदर्शन करेगा। देश के प्रति, दल के प्रति, विचारधारा के प्रति, अपने दायित्व व कर्त्तव्यों के प्रति सदैव हमे बोध कराएगा।

सरकारी कोशिशों की नहीं गल रही दाल : दाम बेकाबू

nkलों की कीमतों में लगातार तेजी का रूख जारी है। अरहर दाल की कीमतों में पिछले कुछ महीनों में इतनी तेजी से उछाल आई है कि इसके बढ़ते दाम आम गृहणियों के लिए सिरदर्द बन गए हैं। पिछले तीन सालों से आयात में दी जाने वाली सब्सिडी के बावजूद दाल की कीमतें बढ़ती रही हैं, जो किस इस बात की ओर इशारा करती हैं कि सरकार की नीतियां इस मुद्दे पर पूरी तरह से विफल रही हैं। आज हालात ऐसे हो गए हैं कि दाल आम आदमी की पहुंच से दूर होती जा रही है। इससे पहले कि आम आदमी पर दालों का बोझ भारी पड़ने लगे, सरकार को इस खामी को व्यवस्थित तरीके से दूर करने की जरूरत है।

येलो पीज (सफेद मटर) एक ऐसा जरिया है, जिसका इस्तेमाल अरहर की बढ़ती कीमतों को रोकने में काफी हद तक मददगार हो सकता है। भारतीयों, खासकर शाकाहारी लोगों के लिए दालें पोषक प्रोटीन हासिल करने की मुख्य स्रोत हैं। इसमें अरहर, मूंग, लाल मसूर, चना और मटर शामिल हैं। वर्ष 2006–07 में चना और येलो पीज को छोड़कर बाकी सभी दालें 20–40 रूपए प्रति किलोग्राम के स्तर पर थीं, लेकिन वर्ष 2009–10 में इनकी खुदरा कीमतें 70–90 रूपए प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई हैं। मुंबई के थोक बाजार में केवल येला पीज (सफेद मटर) के दाम में ही गिरावट दर्ज की गई है।

जहां पिछले साल इसकी कीमतें 22.50 किलोग्राम के स्तर पर थीं, वहीं इस साल पर्याप्त उपलब्धता के कारण इसकी कीमतें घटकर 14.50 रूपए प्रति किलोग्राम के स्तर पर आ गई हैं। पिछले 20 सालों से दालों का उत्पादन लगभग स्थिर है। मोटे तौर पर भारत में हर साल 145 लाख टन दालों का उत्पादन होता है और 25 लाख टन दालों का आयात म्यांमार, कनाडा, आस्ट्रेलिया, तंजानिया और यूक्रेन से किया जाता है। भारत में हर साल 200 लाख टन दालों की जरूरत होती है। भारत में मांग और आपूर्ति के बीच का सालाना अंतर 25–30 लाख टन का है।

पिछले तीन सालों में दाल की कीमतों में इजाफा होने के बावजूद दाल की मांग में कोई कमी नहीं आई है। कीमतों में जारी बढ़ोतरी के बाद भी मांग में लगातार इजाफा हो रहा है। इसके अलावा दाल की सालाना प्रति व्यक्ति उपलब्धता में भी तेजी से गिरावट आई है। जहां 1951 में सालाना स्तर पर दाल की प्रति व्यक्ति उपलब्धता 21 किलोग्राम थी, वह 2008 में घटकर 12 किलाग्राम रह गई है। वर्ष 2006–07–08 के दौरान कीमतों में स्थिरता का रूख देखने को मिला और इसकी कीमतें 30–40 रूपए प्रति किलोग्राम के स्तर पर रहीं। चना और येलो पीज (सफेद मटर) की कीमतें 15–25 रूपए प्रति किलोग्राम पर रहीं। इस दौरान दालों पर 15 फीसदी की सब्सिडी सरकार ने दी। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर दाल की खरीदारी और अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतों मे ंआई उछाल के कारण दाल की कीमतों में बढ़ोतरी का दौर शुरू हो गया।

दालों में निजी कारोबार का दायरा घटते आयात के कारण सिकुड़ गया है। स्थानीय कारोबारी पीएसयू के स्टॉक के घरेलू निस्तारण पर ध्यान दे रहे हैं जिसमें अधिकतम 15 फीसदी तक डिस्काउंट मिल रही है। इसके बाद वे आयातित दालों को बाजार भाव पर दाल मिलों या थोक कारोबारियों को बेचते हैं। इस वजह से घरेलू बाजार में कीमतों में उछाल दिख रहा है। ■

(तेजिंदर नारंग, स्वतंत्र कमोडिटी विशेषज्ञ है)

दालों में फिर शुरू हुआ उबाल

त्योहारों के नजदीक आने के साथ ही खाने–पीने के सामानों में तेजी का सिलसिला बना हुआ है। खासतौर पर अगर दालों की बात की जाए तो इनकी कीमतें आसमान पर पहुंचने लगी हैं। पिछले एक हफ्ते में ही तूर, मूंग और उड़द की कीमतों में खासी तेजी दर्ज की गई है। दालों की थोक कीमतों में इस दौरान 850 रुपए प्रति क्विंटल की तेजी आई है। तूर दाल की थोक कीमतों में इस दौरान 300 रुपए प्रति क्विंटल की तेजी आई है और तूर दाल चढ़कर 7,900 रुपए प्रति क्विंटल पर पहुंच गई है। दिल्ली व्यापार महासंघ के चेयरमैन ओम प्रकाश जैन के मुताबिक, सबसे ज्यादा तेजी मूंग की दाल में आई है। दालों में तेजी आने की कई वजहें हैं। एक तो त्योहारों की वजह से मांग में उछाल आ रहा है। दूसरी ओर उत्पादक इलाकों से सप्लाई में कमी आ रही है। पिछले 10.15 दिनों में दालों की सप्लाई 15 से 20 फीसदी तक गिरी है। जैन बताते हैं, जिस तरह की स्थितियां बनी हुई हैं उनमें दालों की कीमतों में फरवरी से पहले गिरावट आने की कोई संभावना नजर नहीं आ रही है। पिछले एक हफ्ते में मूंग के थोक भाव में 850 रुपए प्रति क्विंटल की तेजी आई है और यह चढ़कर 6,200 रुपए प्रति क्विंटल पर पहुंच गई है। मूंग की तरह ही काली उड़द भी 700 रुपए चढ़कर 4,800 रुपए प्रति क्विंटल पर पहुंच गई है। मसूर, मोठ और काबुली चने की कीमतें भी पिछले कुछ दिनों में ऊपर चढ़ी हैं। कारोबारी दालों की कीमतों में आई इस अचानक तेजी को सट्टेबाजी का नतीजा बता रहे हैं। कारोबारियों का कहना है कि खरीफ सीजन की दालों की नई फसल आने के बावजूद दालों की कीमतों में होने वाला इजाफा चौंकाने वाला है। राजधानी ग्रुप के प्रबंध निदेशक एस के जैन के मुताबिक, बाजार पूरी तरह से सट्टेबाजी पर चल रहा है। नहीं तो ऐसा कोई भी कारण नहीं है कि दालों में इस तरह की तेजी दर्ज की जाए। ■

प्रदेश व्यापी महंगाई विरोधी धरना प्रदर्शन

Hkkपाल में 2 अक्टूबर, 09 को गांधी जयंती के अवसर पर देश में व्याप्त कमरतोड़ महंगाई के विरोध में भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश के सभी मंडलों, नगर पंचायत, नगर पालिका क्षेत्रों में धरना, प्रदर्शन आयोजित किये। भोपाल के सभी 66 वार्डों में महंगाई विरोधी धरना आंदोलन किया गया। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और सांसद नरेन्द्रसिंह तोमर ने महंगाई विरोधी धरना प्रदर्शन को बुधवारा मंडल में संबोधित करते हुए कहा कि शताब्दी की सर्वाधिक विकराल महंगाई कांग्रेस की देन है, मंहगाई के विरोध में हमारा संघर्ष जारी रहेगा। आलोक संजर और अशोक पाण्डे ने भी धरना प्रदर्शन में भाग लिया। बैरागढ़ मेन मार्केट और कोलार में महंगाई विरोध धरना आंदोलन को क्षेत्रीय विधायक जितेन्द्र डागा ने संबोधित करते हुए कहा कि जिस आम आदमी को सकून देने का कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव में वायदा किया था, उसे ही कांग्रेस दंडित कर रही है। अरेरा मंडल में आलोक संजर, रंगमहल चौराहा के पास सुरेन्द्रनाथ सिंह, कोटरा में लिली अग्रवाल, महेश शर्मा, चौक मंडल में आलोक शर्मा, विष्णु राठौर, भेल में मोहन श्रीवास्तव, किरण गुप्ता ने महंगाई विरोधी धरना आंदोलन का नेतृत्व किया। सभी मंडलों के वार्डों में जनता ने महंगाई को लेकर धरना आंदोलन में भाग लिया।

इंदौर के सभी ६९ वार्डों में धरना संपन्न

नगर निगम इंदौर क्षेत्र के सभी वार्डों में भाजपा कार्यकर्ताओं ने धरना प्रदर्शन किया। पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुमित्रा महाजन ने राजवाडा पर धरना आंदोलन को संबोधित किया। गोपीकृष्ण नेमा, ललित पोरवाल, उमाशशि शर्मा ने भी धरना आंदोलन में भाग लिया। गणपति चौराहा पर सुदर्शन गुप्ता, सत्यनारायण सत्तन, माणक सोगामी ने नेतृत्व किया। पलासिया में विधायक महेंद्र हार्डिया ने विशाल धरना आंदोलन का नेतृत्व किया। राऊ में रीता उपमन्यु, मधु वर्मा, जीतू जीराती ने और क्षेत्र क्रमांक 2 में विधायक रमेश मेंदोला ने विशाल जन समूह को संबोधित किया।

सतना नगर निगम क्षेत्र में 10 स्थानों पर धरना प्रदर्शन आयोजित किये गए। सांसद गणेश सिंह, राजकुमार मिश्रा, इंद्राज सिंह यादव, लक्ष्मी यादव, अंजू सिंह बघेल और लाल जी अग्रवाल ने धरना आंदोलन को संबोधित किया।

देश में महंगाई का कारण सूखा नहीं, सरकार की गलत आर्थिक नीतियां हैं क्योंकि यूपीए सरकार पिछले पांच वर्षों से महंगाई को लेकर कोरी चिंता व्यक्त कर रही है। रोग बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की कहावत चरितार्थ हो रही है।

जबलपुर नगर निगम के 70 और केन्द्र के 8 वार्डों में महंगाई विरोधी धरना प्रदर्शन आयोजित किया गया। सांसद राकेश सिंह, महापौर सुशीला सिंह, विधायक हरेन्द्रजीतसिंह बब्बू, जिलाध्यक्ष विधायक शरद जैन, अंचल सोनकर, प्रभात साहू ने धरना प्रदर्शन का नेतृत्व किया।

उज्जैन के सभी नौ मंडलों में आयोजित धरना प्रदर्शन का नेतृत्व बाबूलाल जैन, शिवनारायण जागीरदार, जगदीश अग्रवाल, अशोक प्रजापति, दिवाकर नातू, मोहन यादव ने किया और केन्द्र की गलत आर्थिक नीतियों को बेनकाब किया।

सागर में मोतीनगर चौराहा पर विशाल धरना आंदोलन को संबोधित करते हुए सांसद भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि देश में महंगाई का कारण सूखा नहीं, सरकार की गलत आर्थिक नीतियां हैं क्योंकि यूपीए सरकार पिछले पांच वर्षों से महंगाई को लेकर कोरी चिंता व्यक्त कर रही है। रोग बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की कहावत चरितार्थ हो रही है। जनता केन्द्र की यूपीए सरकार को उखाड़ फेंके। शैलेन्द्र जैन, प्रदीप लारिया ने भी धरना प्रदर्शन को संबोधित किया।

इंसान की जान को छोड़कर कांग्रेस ने हर चीज महंगी की-चंद्रमणि त्रिपाठी

रीवा में धरना प्रदर्शन को संबोधित करते हुए चंद्रमणि त्रिपाठी ने कहा कि तत्कालीन एनडीए सरकार यदि प्याज की महंगाई के लिए जवाबदेह थी, तो आज कमरतोड़ महंगाई के लिए कांग्रेस नीत यूपीए सरकार अपने को कैसे मुक्त कर सकती है। यूपीए के जमाने में इंसान की कीमत घटी है, अन्य सभी वस्तुएं आसमान छू रही हैं। त्रिपाठी ने कहा कि कांग्रेस पूंजीवाद परस्त दल है, जिसने लोक सभा चुनाव के लिए औद्योगिक घरानों और मल्टीनेशनल्स से चंदा बटोरा और आम आदमी को लूटने की छूट दी है। चंद्रमणि त्रिपाठी ने कहा कि दुनिया में मंदी का दौर है और भारत में हर चीज महंगी है। जाहिर है कि केन्द्र सरकार की नीतियों में गड़बड़झाला है, इसे भाजपा बेनकाब करेगी।

ग्वालियर के सभी 60 वार्डों में धरना, प्रदर्शन आयोजित किया गया। अभय चौधरी ने कहा ने कहा कि देश में महंगाई ने गरीबों के मुंह से निवाला छीन लिया है। कांग्रेस अपनी जवाबदेही से मुक्त नहीं हो सकती है। ग्वालियर महापौर विवेक शेजवलकर, वेदप्रकाश शर्मा ने भी धरना प्रदर्शन में भाग लिया।

शिवपुरी के सभी 12 मंडलों में महंगाई के विरोध में धरना प्रदर्शन आयोजित किया गया। विधायक माखनलाल राठौर, अनुराग अष्ठाना ने धरना प्रदर्शन का नेतृत्व किया। श्योपुर के 6 मंडलों में एवं गुना के 8 मंडलों में धरना प्रदर्शन आयोजित किया गया।■

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

प्यारेलाल खंडेलवालजी ने खून–पसीने से संगठन को सींचा था। जनसंघ के जमाने से लेकर उनके निधन तक वह संगठनात्मक मजबूती के लिए ही प्रयासरत रहे। भाजपा में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। मेरे जैसे अनेकों कार्यकर्ताओं को उन्होंने खड़ा किया है। उन्होंने सदैव मूल्य आधारित और सैद्धांतिक राजनीति की। उनका सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन आईने की तरह साफ रहा। उनके निधन से प्रदेश ही नहीं संपूर्ण देश को अपूरणीय क्षति हुई है। मैं उनकी आत्मा की शांति के लिए परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं।

सुंदरलाल पटवा, पूर्व मुख्यमंत्री व वरिष्ठ भाजपा नेता

समर्पित तपस्वी नेता थे। उनके साथ लंबे समय तक मेरा गहरा संबंध रहा है। उनका अवसान मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति है। उन्हें मेरी विनम्र श्रद्धांजलि।

कैलाश जोशी, पूर्व मुख्यमंत्री व सांसद

स्व. खंडेलवाल के साथ लंबे समय तक काम करने का मौका मिला। कुशल संगठक और समाज का निरंतर हित चिंतन करने वाले व्यक्तित्व थे। समाजसेवा के लिए समर्पित वह हमेशा प्रेरणादायक रहेंगे।

नारायण प्रसाद गुप्ता नानाजी, वरिष्ठ भाजपा नेता

प्यारेलालजी और हमारा साथ 50 वर्ष से भी ज्यादा का रहा है। उन्होंने संघ से लेकर भारतीय जनता पार्टी के प्रति जितनी निष्ठा और ईमानदारी दिखाई, जो समर्पण उनमें था, वो अद्वितीय था। आज की पीढ़ी के लिए वो अनुकरणीय हैं। मेरे लिए उनका निधन बहुत बड़ी व्यक्तिगत क्षति है।

कैलाश सारंग, वरिष्ठ भाजपा नेता

स्व. खंडेलवाल पार्टी के आधारस्तंभ थे। मैंने उनके साथ 40 साल तक काम किया है। उनके निधन से पार्टी ने एक देशभक्त खो दिया है। मेरे लिए यह व्यक्तिगत और पार्टी के लिए अपूर्णीय क्षति है।

कप्तानसिंह सोलंकी, सांसद

स्व. खंडेलवाल मप्र भाजपा के आधारस्तंभ थे संघ और भाजपा के लिए समर्पित उनका तपस्वी जीवन हमेशा कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करता रहेगा।

अनिल दवे, सांसद

उन्होंने अपना पूरा जीवन पार्टी के लिए समर्पित किया। ऐसे व्यक्तित्व का अवसान अपूरणीय क्षति है जिसकी पूर्ति बहुत कठिन है। मप्र भाजपा के विकास में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

कैलाश विजयवर्गीय, उद्योगमंत्री

प्यारेलाल जी चलती फिरती संस्था थे। उनके बारे में जितना कहा जाए कम है। संगठन के लिए उन्होंने जो किया, उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है।

जब प्यारेलालजी बने 'डियर रेड'

स्व. प्यारेलाल खण्डेलवाल ने आपातकाल के बाद लगे प्रतिबंध से बचने के लिए 'धरा कुछ ऐसा रूप'

विशेष विमान से आया पार्थिव शरीर

प्यारेलालजी का पार्थिव शरीर दिल्ली से विशेष विमान द्वारा भोपाल लाया गया। विमान में पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री रामलाल, प्रकाश खंडेलवाल और विपिन दीक्षित भी साथ आए। पार्थिव शरीर को अंतिम दर्शनों के लिए कुछ देर हवाईअड्डे पर भी रखा गया। वहां मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर, संगठन महामंत्री माखन सिंह सहित जगदीश देवड़ा, लक्ष्मीकांत शर्मा, ध्रुवनारायण सिंह, जितेन्द्र डागा, आलोक शर्मा, सुरेन्द्र नाथ सिंह, विजय शर्मा आदि ने पुष्पांजलि अर्पित की। दिल्ली से एक और विमान अन्य भाजपा नेताओं को लेकर भोपाल पहुंचा। इनमें सांसद प्रभात झा, राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री सौदान सिंह, सत्यनारायण जटिया, थावरचंद गेहलोत, संजय जोशी आदि नेता भी थे।

कर चुके थे पिंडदान

विचारधारा और समाज के लिए आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लेने वाले खंडेलवाल एक सन्यासी की तरह रहे। पार्टी और विचार ही उनकी पूजा थी। वर्ष 2003 में उन्होंने बद्रीनाथ में स्वयं का पिंडदान भी कर दिया था। वे पिछले 12 सालों से कैंसर से लड़ाई लड़ रहे थे और उन्होंने जीवटता से कैंसर को हराया भी, लेकिन उनका निधन हृदयाघात से हो गया।

कार्यालय का कमरा ही थी दुनिया

तीन बार सांसद रहे खंडेलवाल कभी सरकारी आवास में नहीं रहे। पार्टी कार्यालय का एक कमरा ही उनका निवास रहा। वे दिल्ली में भी केन्द्रीय कार्यालय में ही रहे। एक बैग उसमें दो जोड़ धोती–कुर्ता ही उनकी गृहस्थी थे। वे भाजपा में ठाकरे के समकालीन माने जाते थे। संयुक्त मप्र में ठाकरे, खंडेलवाल, मोरू भईया मद्रे और नारायण प्रसाद गुप्ता की चौकड़ी जनसंघ और भाजपा में काफी सक्रिय रही। ये चारों प्रचारक थे।

गाय बनेगी विश्व एकता का साझा सूत्र

माँ की दया

X त 62 वर्ष पहले हमारा देश विदेशी शासन से स्वतंत्र हुआ। विडंबना देखिए, यद्यपि हम स्वयं अपने स्वामी बन गये पर पश्चिमी चकाचौंध के अवांछनीय प्रभावों के दास भी हो गये। तब से अपनी यात्रा के प्रत्येक पड़ाव पर हम अपनी मौलिकता और स्वाभिमान खोते गये।

आज की वास्तविकता भयावह है। हम जानते हुए भी विषैला भोजन करते है। हमारे अपने स्वास्थ्यकर भोजन के उत्पादन में हमारी दिलचस्पी समाप्त हो गई है। परिणामतः बाहरवालों पर हमारी निर्भरता बढ़ती जा रही है।

यदि मनुष्यों की यह दुःखद स्थिति है, तो पशु–पक्षियों की गति बदतर है।

विद्वान लोग एक कारण बताते है, मानव जाति भूमंडल पर एक लाख वर्षों से है। इस काल में हमारे पर्यावरण को

पिछले 100 वर्षों से हुई क्षति उसके पहले के 99,900 वर्षों मे हुई क्षति के बराबर है। स्पष्टतः इसका कारण है मनुष्य द्वारा हर वस्तु पर नियंत्रण का लोभ।

यह संभव भी नहीं है और यही दुष्प्रयास हमारे घोर कष्टों का कारण भी है।

भारतीय संदर्भ में इस बंधन से निकलने का एक मात्र मार्ग है – हमारे देश में एक समय में फलते–फूलते गौ केंद्रित ग्राम की तरफ वापसी।

इसी पृष्ठभूमि में श्री रामचंद्रापुर मठ के पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य श्री राघवेश्वर भारती स्वामीजी ने विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा अभियान प्रारंभ किया है जिसका उद्देश्य लोगों को गौ केंद्रित ग्रामों तक वापस ले जाना है।

यह सर्वविदित है कि श्री स्वामीजी ने अपना जीवन गौ कल्याण के लिये समर्पित किया है। इस यात्रा के माध्यम से उनका प्रयास है हमारे राष्ट्र और समस्त विश्व को गाय रूपी एक डोर में बांधना। इसके साथ ही जुडा है प्रत्येक आत्मा में प्रकृति प्रेम जगाना।

यात्रा की रूपरेखा

fo"k; oLrq % गाय संसार की माता है।

ladYi % गाय की रक्षा मेरा पवित्र कर्तव्य है।

ukjk % जो गाय को बचाये, गाय उसे बचाये।

y{; % गो भक्ति से ग्राम प्रगति करें, ग्रामों की प्रगति से राष्ट्र की प्रगति हो, जिससे संसार की प्रगति हो।

ekè;e % गाय

lans'k % चलें गाँव की ओर। चलें गाय की ओर। चलें प्रकृति की ओर।

ewy ladYi % पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य श्री श्री राघवेश्वर भारती स्वामीजी, श्री रामचंद्रापुर मठ

ewy çsj.kk % पूज्य गोऋषि श्री श्री स्वामी दत्तशरणानंदजी महाराज, पथमेडा

çorZd % पूज्य श्री श्री रविशंकरजी, पूज्य श्री श्री रामदेवजी बाबा, पूज्य श्री श्री माता अमृतानंदमयीजी, पूज्य आचार्य श्री श्री विद्यासागरजी, पूज्य आचार्य श्री श्री महाप्रज्ञजी, पूज्य आचार्य श्री श्री विजय रत्नसुंदर सुरीश्वरजी, पूज्य श्री श्री स्वामी दयानंद सरस्वतीजी, पूज्य श्री श्री मुरारी बापूजी महाराज, पूज्य श्री श्री सद्गुरु जगजीत सिंहजी महाराज, पूज्य श्री श्री सयामडांग रिनपोचेजी

la?kVu % पूज्य डा. प्रणव पंड्याजी के गौरवाध्यक्षता में राष्ट्रीय समिति, राज्य और जिला स्तर पर समितियाँ

leFkZu % सभी गो भक्तों का

;k=k 'kqHkkjaHk % कुरुक्षेत्र, विजयदशमी, 30 सितंबर, 2009

vofèk % 108 दिन

vk;kstu % गाय को प्रार्थना, संदेश, जुलूस, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पर्व का माहौल

dqy ekxZ % 20,000 कि.मी

lg;k=k;sa % 15,000 (जिला तालूका – ग्राम केंद्रों से)

lg;k=k ekxZ % 10 लाख कि.मी

lekiu % नागपुर, मकर संक्रांति, 17 जनवरी, 2010

हस्ताक्षर अभियान : गो के प्रति हिंसा रोकने के लिए और गाय को राष्ट्रीय प्राणि का दर्जा दिलाने के लिए करोडों के संख्या मे हस्ताक्षर संग्रह होगा।

भारत के राष्ट्रपति को प्रस्तावना : 29 जनवरी, 2010 को करोड़ों हस्ताक्षरों के साथ

क्या यह यात्रा अपरिहार्य है?

हाँ, यह कोरी काल्पनिक आवश्यकता नहीं है। यह आवश्यकता है करो या मरो की स्थिति तक पहुँचे एक राष्ट्र की। आधुनिक मानव विपरीत ध्रुवों और विरोधाभासों के मध्य फंसा है।

शांति बनाम आनंद, प्राकृतिक बनाम यांत्रिक, समानुभूति बनाम स्वार्थ, प्रकृति बनाम पुरुष, दूर दृष्टि बनाम अदूरदर्शिता, सर्वांगीण लाभ बनाम वित्तीय लाभ, कृषि बनाम उद्योग, गौ

आधारित कृषि बनाम यांत्रिक कृषि, ग्राम बनाम नगर, गुणवत्ता बनाम संख्या, स्वास्थ्यकारी भोजन बनाम जंक फूड, गहरी नींद बनाम द्रव्यजनित तंद्रा – ऐसे संघर्षों की तुलना में बाह्य आतंकवाद नगण्य है।

चिंताक्रांत कृषक

किसान चेष्टा कर रहा है भूमि का सार तत्व खींच लेने की। उसकी दृष्टि में देशी बीज, गायें और खाद बेकार है। वह बहुराष्ट्रीय कंपनियों से संकर बीज, रासायनिक खाद, कीटनाशक और कृषि उपकरण लेने को प्रस्तुत है। कुछ वर्षों तक बेहतर फसल और अधिक आय के भ्रमजाल को वह समृद्धि समझ बैठता। अपने बच्चों को शहरों में पढ़ा कर उन्हें वह गांवों और खेती से दूर करता है। कालांतर में कृषि के गलत तरीके उसकी भूमि का उपजाऊपन क्रमशः कम कर देते हैं। पैदावार घट जाती है और ऋण और कठिनाइयाँ बढ़ जाती हैं और वह आत्महत्या जैसे चरम कदम उठा बैठता है। यह एक अपवादस्वरूप कहानी नहीं है। बल्कि हमारी जनसंख्या का 70 प्रतिशत माने जाने वाले आम किसानों की नियति है। एक और दृष्टि से मनुष्यों की स्थिति बेहतर है। वन्यप्राणी जो कि पहले हजारों कि संख्या में थे, अब सैंकड़ों कि संख्या में आ गये हैं। भूमि की सतह बंजर होती जा रही है, यह आश्चर्य की बात है कि कुछ जंगल अभी भी बचे हुए हैं। गौ परिवार जो कि किसान का जीवन आधार है, घटता जा रहा है। भारतीय गायों की 70 प्रजातियों में से केवल 33 वची हैं। इन बची हुई नस्लों में भी कुछ में तो सिर्फ 10 या 20 गायें ही मौजूद हैं। 60 वर्षों में वधशालाओं की संख्या 300 से 36,000 हो गई है।

स्वाधीनता से अब तक देश, अपनी 70 प्रतिशत गौ संख्या खो चुका है।

इस दुःखद स्थिति का एक स्थायी समाधान आज की आवश्यकता और चुनौती है। हमारे लिये गौ केंद्रित ग्रामीण जीवन ही श्रेष्ठ विकल्प है। पारस्परिक निर्भरता, देख–भाल, सम्मान और सब जीवों के हित के प्रति चिंता इस विचारधारा का मध्य बिंदु है। जीवन के प्रत्येक पल में यह सत्य परिलक्षित होता है। विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा इन पवित्र संदेशों को भारत के कोने–कोने तक पहुँचायेगी। कृपया इसके महत्व पर गौर करें। ■

दस मिनट के अनवरत शंखनाद से शुरू हुई गौ ग्राम यात्रा

Xk वंश के संवर्धन और ग्राम्य सभ्यता के संरक्षण के उद्देश्य से विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा का शुभारंभ आज हरियाणा के कुरूक्षेत्र में 10 से अधिक मिनटों के अनवरत शंखनाद और उसके बाद उस्ताद सईदुद्दीन डागर के गायन के साथ शुरू हुआ।

गायत्री परिवार के प्रमुख और यात्रा समिति के गौरवाध्यक्ष डा. प्रणव पांड्या ने उद्घाटन समारोह के लिए भेजे अपने संबोधन में कहा कि आज गांव सिकुड़ रहे हैं और शहर फैल रहे हैं जिससे देश में अशांति, अराजकता और आतंकवाद फैल रहा है। यह यात्रा देश को इनसे मुक्ति दिलाने में सहायक होगी। यह यात्रा भारत के पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण चारों कोनों को एक सूत्र में बांधेगी। उन्होंने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित कर गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की मांग की। उन्होंने यात्रा में गायत्री परिवार द्वारा पूर्ण सहयोग दिए जाने की भी घोषणा की।

सी बी आई के पूर्व निदेशक सरदार जोगिंदर सिंह ने कहा कि अकबर ने गोहत्या को प्रतिबंधित कर दिया था। उसके अतिरिक्त बाबर और जहांगीर जैसे मुस्लिम शासकों ने भी गोहत्या पर आंशिक प्रतिबंध लगाने की बात कही थी। उन्होंने कहा कि गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाना ही चाहिए।

पेजावर पीठ के स्वामी विश्वेश तीर्थ ने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किए जाने की मांग का समर्थन करते हुए कहा कि व्याघ्र को राष्ट्रीय पशु माने जाने के कारण ही देश में आपराधिक प्रवृत्तियां और उसके कारण आतंकवादी घटनाएं बढ़ रही हैं। गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने से देश में शांति आएगी।

विश्व हिन्दु परिषद् के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक सिंहल ने भारत को आध्यात्मिक राष्ट्र घोषित करने की मांग करते हुए कहा कि अपने देश को धर्मविहीन बनाने की अंग्रेजों की साजिश के अनुसार ही अपने देश का राजनीतिक नेतृत्व काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि इसी कारण देश में गोहत्या बढ़ी है। पिछले दस वर्षों में चार करोड़ गायों की हत्या हो चुकी है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर कार्यवाह भैया जी जोशी ने इस अवसर पर कहा कि इस यात्रा का उद्देश्य ग्राम्य सभ्यता का पुनरूज्जीवन है। उन्होंने कहा कि आज शहर ही विकास का केंद्र बने हुए हैं जबकि भारत के सर्वांगीण विकास के लिए योजनाओं को ग्रामोन्मुख करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी. जयप्रकाश नारायण और बिनोवा भावे जैसे महापुरूषों ने भारत को ग्रामोन्मुख करने की बात की थी। आज उन महापुरूषों के विचारों को अमल में लाना जरूरी है। विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा इसी उद्देश्य से शुरू की गयी है।

इस यात्रा का संकल्प रामचंद्रपुरा मठ के शंकराचार्य राघवेश्वर भारती स्वामी जी ने किया था। समारोह के उद्घाटन के मौके पर उनके साथ फिल्म कलाकार सुरेश ओबराय, तिब्बत की निर्वासित संसद की डिप्टी स्पीकर डोलमा गेरी सहित कई गणमान्य लोगों ने गौपूजा की। ■

हमारा लक्ष्य- ''समरस समाज''

& loknnkrk }kjk

Hkk रतीय जनता पार्टी, अनुसूचित जाति मोर्चा का अखिल भारतीय तीन दिवसीय अभ्यास वर्ग दिनांक 10,11,12 सितम्बर 2009 को निष्काम सेवा ट्रस्ट, भूपतवाला, देवभूमि, हरिद्वार, उत्तराखण्ड में आयोजित किया गया जिसमें 120 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

तीन दिवसीय अभ्यास वर्ग का शुभारंभ भारत रत्न पू. बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय के चित्रों पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर किया गया। अभ्यास वर्ग की अध्यक्षता माननीय डॉ. सत्यनारायण जटिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुसूचित जाति मोर्चा, भाजपा एवं मंच संचालन श्री कैलाश सांकला जी राष्ट्रीय महामंत्री ने किया।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. सत्यनारायण जटिया भारतीय जनता पार्टी, अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि ''सेवा की भावना से निष्ठापूर्वक इस अभ्यास वर्ग, देवभूमि हरिद्वार में हमें सेवा का प्रण लेने का अभ्यास करना चाहिए।''

उद्घाटन सत्र के संबोधन में श्री रामप्यारे पाण्डे, राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी भाजपा ने कहा कि प्रशिक्षण ठीक से हो एवं इसकी अवधारणा भी सार्थक हो ऐसा प्रयास होना चाहिए।

द्वितीय सत्र में अपने विचार रखते हुए डॉ. विजय सोनकर शास्त्री ने कहा कि सामाजिक समता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है।

उन्होंने कहा कि सामाजिक–राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं को डॉ. अम्बेडकर द्वारा लिखी गई ''शूद्रों की खोज'', ''अछूत कौन और कैसे'' अवश्य पढ़नी चाहिए। जिसमें डॉ. अम्बेडकर ने लिखा है कि वर्तमान दलित जातियां कोई और नहीं, बल्कि ब्राह्मण–क्षत्रिय ही हैं। प्राचीन वैदिक शूद्र नहीं हैं। सामाजिक विषमता वैदिक नहीं वरन् विदेशी आक्रांताओं एवं अंग्रेजों के कारण हिन्दू समाज को षड्यंत्रपूर्वक तोड़ने की साजिश का परिणाम है।

तृतीय सत्र में प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए श्री रमेशचन्द्र 'रत्न' राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मोर्चा गुलाम भारत में गोरी चमड़ी वाले अपनी कानूनी व्यवस्था अपने ढंग से चलाते थे। देश आजाद हुआ तब यह महसूस किया गया कि देश अपने ढंग से संविधान निर्माण कर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का संचालन स्वस्थ परंपराओं के अनुसार करेगा।

खजान दास जी, राज्यमंत्री उत्तराखंड सरकार ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने वास्तव में अ.जा. वर्ग के साथ सामाजिक एवं राजनैतिक न्याय करने में सहयोग प्रदान किया है। चाहे के.आर. नारायणन को देश का राष्ट्रपति बनाने का अवसर हो अथवा इस वर्ग की मायावती को उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनाने का काम हो उसमें भाजपा ने अपना दायित्व सामाजिक एवं राजनैतिक रूप से इस समाज को संरक्षण की दृष्टि से ही निभाया था।

पंचम सत्र में ''भारतीय जनता पार्टी, अनु. जा. मोर्चा संगठन और संरचना'' विषय पर बोलते हुए रमापति शास्त्री, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, मोर्चा ने कहा कि सभी चुनौतियों को स्वीकार कर उसका सामना करने की आवश्यकता है। मोर्चा भाजपा का अभिन्न अंग है। हमारा कार्य समाज के बीच में जाकर इस समाज को भाजपा की रीति–नीति का परिचय कराते हुए उसके मन–मस्तिष्क से भाजपा को जोड़ने की चुनौती हमें स्वीकार करने की आवश्यकता है। जिसे अवसर मिल गया उसे अब दूसरे को अवसर देना चाहिए तब बराबरी का भाव जागेगा। तभी सामाजिक समरसता का उद्देश्य प्राप्त हो सकेगा।

श्री राजेश बग्गा राष्ट्रीय मंत्री मोर्चा ने पंजाब में मोर्चा की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

षष्ठम सत्र में ''भाजपा अ.जा. मोर्चा और समसामयिक चुनौतियां'' विषय पर अपने विचार रखते हुए जोगेश्वर गर्ग–पूर्व मंत्री, राजस्थान सरकार ने कहा कि भाजपा ने वाजपेयी जी के प्रधानमंत्री काल मे कई संवैधानिक प्रावधान अ.जा. वर्ग के उत्थान के लिए लागू किए। किन्तु हमारे द्वारा जनहित के उन मुद्दों को प्रचारित–प्रसारित नहीं कर सकने की बड़ी भूल रही है।

नरेश बंसल, संगठन महामंत्री भाजपा, उत्तराखंड प्रदेश ने कहा कि भाजपा इस मोर्चा के सहयोग से सामाजिक समरसता के भाव जागृत कर सत्ता में आने का लक्ष्य रखती है। मोर्चा की मजबूती के लिए और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। कार्यकर्ता के सुख–दुख में शामिल होना आज हमारी कड़ी चुनौती है। इस चुनौती को स्वीकार कर हम भाजपा को मजबूती प्रदान कर सकेंगे ऐसा मानना है।

सप्तम सत्र में भाजपा की विचारधारा 'एकात्म मानवदर्शन' पर प्रस्तुत करते हुए श्री महेश चन्द्र शर्मा जी, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष भाजपा राजस्थान ने कहा कि एकात्म माननवाद दर्शन समग्रता का विषय है। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने कहा हमारी सभ्यता पश्चिम के विचार के प्रवाह के कारण अस्थिर हो रही है। यह पश्चिमी शिक्षा का परिणाम है। भारतीय मनीषा कहती है नीतियां बनाने वालों तुम नीतियां किसके लिए बना रहे हो व्यष्टि और समष्टि के लिए नीतियां बने तो कारगर होगा। व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि और परमेष्टि के लिए योजनाएं बने यही एकात्मवाद हैं। काल मार्क्स ने कहा कि व्यक्ति को रोटी, कपड़ा और मकान चाहिए। जबकि पं. दीनदयाल उपाध्याय ने कहा कि मानव को वैचारिक स्वतंत्रता के साथ–साथ रोटी, कपड़ा और मकान भी चाहिए

अष्ठम सत्र में ''आगामी विधानसभा चुनाव में मोर्चे की भागीदारी'' विषय पर प्रकाश डालते हुए डॉ. सत्यनारायण जटिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुसूचित जाति मोर्चा भाजपा ने आह्वान किया कि आगामी महाराष्ट्र हरियाणा विधानसभा चुनाव में कार्यकर्ता अभी से पार्टी कार्य में जुट जाए तथा उन्होंने कहा कि हरियाणा से सटे राज्य– दिल्ली, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश तथा राजस्थान के जालौर क्षेत्र के कार्यकर्ता कम से कम 15 दिनों का समय हरियाणा विधानसभा चुनाव में लगाएं।

भारतीय जनता पार्टी, अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री– श्री कैलाश सांकला ने केन्द्रीय व्यवस्था में लगे कार्यकर्ताओं का परिचय करवाया तथा अभ्यास वर्ग में आए सभी प्रशिक्षार्थियों का आभार व्यक्त किया।

देश को मजबूत बनाने में कांग्रेस नाकाम : राजनाथ सिंह

भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने कांग्रेस पर आरोप लगाया है कि 55 साल तक सत्ता में रहने के बावजूद पार्टी देश को मजबूत करने तथा आतंकवाद के खात्मे के लिए पड़ोसी देश पर दबाव बनाने में विफल रही है।

पार्टी उम्मीदवार राहुल अहीर के पक्ष में चुनावी रैली में श्री सिंह ने कहा कि कांग्रेस के पास 55 साल तक सत्ता रही है। वह देश को मजबूत करने में असफल रही है। पार्टी पाकिस्तान व चीन पर भी दबाव बनाने में नाकाम रही है, क्योंकि कथित रूप से ये देश आतंकी गतिविधि में संलिप्त हैं।

भाजपा अध्यक्ष ने कांग्रेस पर इतालवी व्यवसायी और अस्सी के दशक में करोड़ों रुपए के बोफोर्स घोटाले के मुख्य आरोपी ओत्तावियो क्वात्रोच्चि को बचाने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कांग्रेस और राकांपा की अगुआई वाली प्रदेश की लोकतांत्रिक मोर्चा की सरकार पर हमला बोलते हुए उसे आवश्यक वस्तुओं के दामों में वृद्धि और भ्रष्टाचार के लिए लिए जिम्मेदार ठहराया। पूर्व कृषि मंत्री ने यह भी कहा कि कृषि मंत्री शरद पवार की नीति किसान विरोधी है और यही कारण है कि प्रदेश में और अधिक किसान आत्महत्या कर रहे हैं। ■

दिल्ली

सरकार आम आदमी का दर्द समझे : प्रो. कोहली

भाजपा दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष प्रो. ओम प्रकाश कोहली ने कहा कि निर्धनता और विकास को लेकर सरकार आंकड़ों के खेल में उलझ कर रह गई है। उन्होंने बताया कि 1993–94 में योजना आयोग के आंकड़ों के अनुसार गरीबी 36 प्रतिशत थी जोकि 2004–05 में घटकर 28 प्रतिशत पर आ गयी थी। लेकिन डॉ. एन. सी. सक्सेना ने गरीबी को नई गणना के कलोरी मानक आधार पर जो रिपोर्ट ग्रामीण विकास मंत्रालय को सौंपी है, उसके आधार पर 50 प्रतिशत ग्रामीण आबादी आज गरीबी की रेखा के नीचे जीवन बिता रहे हैं और इन पोषण मानकों के अनुसार गांवों में प्रति माह 700 रूपए और शहरों में 1000 रूपए कम से कम प्रति व्यक्ति के लिये अपेक्षित है।

प्रो. कोहली ने कहा कि बढ़ती गरीबी व पेट की मार के चलते लोगों का शहरों की ओर पलायन निरन्तर बढ़ रहा है। इसे विकास की दुहाई देने वाले केन्द्रीय गृहमंत्री श्री पी. चिदम्बरम, दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित व राज्यपाल महोदय समझने में विफल रहे हैं। इसी कारण वे प्रवासियों को दिल्ली का बोझ बताने में जहां कोई संकोच नहीं करते, वहीं दूसरी ओर कामनवेल्थ खेलों की तैयारियां में इनके श्रम के योगदान को भी उचित महत्व नहीं देते हैं। आज जरूरत इस बात की है कि आचरण सुधारने की सीख देने के पहले सरकार, आम आदमी के दर्द को भी समझे। ■

पृष्ठ 9 का शेष

4 फरवरी 2003 : दिल्ली हाई कोर्ट ने राजीव गांधी को क्लीन चिट दी
31 मई 2005 : हाई कोर्ट ने हिन्दुजा बंधुओं के खिलाफ आरोप भी निरस्त किए
7 मार्च 2007 : सीबीआई ने अर्जेंटीना के विदेश विभाग में क्वात्रोची के प्रत्यर्पण के लिए अपील दायर की
8 जून 2007 : अर्जेंटीना की अल डोराडो अदालत ने क्वात्रोची के प्रत्यर्पण की भारत की अपील ठुकराई
25 नवंबर 2008 : क्वात्रोची के खिलाफ रेड कार्नर नोटिस वापस ली गई
30 अप्रैल 2008 : सीबीआई ने क्वात्रोची के खिलाफ मामले पर आगे कार्रवाई के लिए अदालत से समय मांगा
29 सितंबर 2009 : केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट को क्वात्रोची के खिलाफ मामला वापस लेने की जानकारी दी ■

कार्यकर्ताओं ने लिया संगठन को सर्वस्पर्शी बनाने का संकल्प

Hkkरतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और सांसद नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि आर्थिक उदारीकरण के बाद कांग्रेसनीत यूपीए सरकार जहां विकास का मूल्यांकन आंकड़ों में कर रही है, एकात्म मानववाद के प्रवर्तक पं.दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन मानवीय गरिमा की धरोहर है। पं. दीनदयाल उपाध्याय ने प्रगति में हमेशा मानवीय चेहरा देखने और समाज के अंतिम व्यक्ति को खुशहाल बनाने की आवश्यकता रेखांकित की। कटनी में भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय के भवन की आधारशिला रखते हुए नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि पिछड़े वर्गों की खुशहाली के काम में जुटना ही पं. दीनदयाल उपाध्याय के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि नया कार्यालय भवन जन समस्या के समाधान का केन्द्र बनेगा। बाद में नरेन्द्र सिंह तोमर ने कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया और अपने कार्य और आचरण से संगठन की छवि उज्जवल करने का आह्वान किया।

नरेन्द्र सिंह तोमर ने जबलपुर में कार्यकर्ता सम्मेलनों को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय जनसंघ की स्थापना के बाद से डा.श्यामाप्रसाद मुखर्जी और पं.दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्रवाद का झंडा बुलंद करते हुए जिस बलिदानी परंपरा को अक्षुण्ण रखा है, उसी का सुखद परिणाम है कि देश परमाणु शक्ति संपन्न बना। जम्मू–कश्मीर भारत का अंग है, तो इसका श्रेय कांग्रेस को नहीं भारतीय जनसंघ और भाजपा को है, जिसने दो निशान, दो विधान की व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए प्राणों की बाजी लगायी। उन्होंने पं.दीनदयाल उपाध्याय के अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए ध्येयनिष्ठा से कार्य करने का आह्वान किया। नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि भाजपा के लिए सत्ता मंजिल नहीं, अपितु समाज और राष्ट्र में सुखद परिवर्तन लाने का साधन है। अतः पं. दीनदयाल जी के बताए रास्ते पर चलें। नये कार्यकर्ताओं का सृजन करें और समाज और राष्ट्र के प्रति समर्पित हों। समष्टि के लिए व्यष्टि का बलिदान करने के लिए संकल्पित हों। प्रदेश के सभी 594 मंडलों में आयोजित नव कार्यकर्ता सम्मेलनों में महंगाई के विरोध में एक प्रस्ताव भी पारित किया गया और अगले माह महंगाई के विरोध में आंदोलन करने की व्यूह रचना पर विचार किया गया।

खंडवा जिलांतर्गत खालवा में प्रदेश संगठन महामंत्री माखन सिंह चौहान ने कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में पार्टी के कार्यकर्ताओं को अपने धैर्य, समर्पण का परिचय देकर जन समस्याओं के समाधान की चुनौती पर खरा उतरने के लिए स्थापित होना है।

खण्डवा नगर में सम्मेलन को प्रदेश मंत्री बाबूसिंह रघुवंशी ने संबोधित करते हुए कहा कि पं.दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद में ही विश्व का कल्याण समाहित है। इस विचारधारा का विस्तार इसे जीवन में उतार कर करें। बाबूसिंह रघुवंशी ने प्रदेश सरकार की उपलब्धियों पर चर्चा करते हुए देश में व्याप्त महंगाई के लिये कांग्रेस कर दोषी बताया और कहा कि इसके विरोध में आक्रामक आंदोलन खड़ा कर केन्द्र को अपनी नीतियों के सुधार के लिये विवश करें।

भाजपा के प्रदेश सह संगठन महामंत्री भगवतशरण माथुर ने इंदौर के सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा विचार आधारित पार्टी है। राजनीति राष्ट्र और समाज के लिये हो यही पं. दीनदयाल की विचारधारा का संदेश है। इसने पार्टी को सर्वस्पर्शी बनाया है। कार्यकर्ता विचार दर्शन को विस्तारित करें। प्रदेश सह संगठन महामंत्री अरविन्द मेनन ने दमोह में कार्यकर्ताओं का आह्वान किया। गरीब समाज के अंतिम व्यक्ति के हितचिंतन में शक्ति संसाधन केन्द्रित करें। देश में भाजपा ही विचार आधारित पार्टी है।

सागर जिले में पं.दीनदयाल उपाध्याय की सादगी, त्याग समर्पण की परंपरा को आगे बढ़ाने का आह्वान करते हुए प्रदेश महामंत्री और सांसद भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी आज देश में जन आकांक्षा का केन्द्र है। कार्यकर्ता जनआकांक्षाओं पर खरा उतरने के लिए ध्येयनिष्ठ और संकल्पित प्रयासों से आगे आएं।

भोपाल के बैरागढ़ में कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए वरिष्ठ मंत्री बाबूलाल गौर ने कहा कि कार्यकर्ता विचारधारा से जुड़ें। पं.दीनदयाल जी ने समाज के विकास में मानवीय चेहरा देखा था। जब तक समाज का हर व्यक्ति समान अवसर और न्याय पाने से वंचित रहेगा, हमारा संकल्प अधूरा रहेगा। भाजपा के इन्हीं आदर्शों ने भाजपा को देशव्यापी, सर्वस्पर्शी बनाया है। विधायक जितेन्द्र डागा ने भोपाल के बैरागढ, बिलखिरिया मंडल में कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया।

इंदौर के अंबेडकर नगर में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए सुमित्रा महाजन ने कहा कि कार्यकर्ता संस्कारित बनें। समाज के समग्र विकास की इकाई अंतिम व्यक्ति बने। ऐसा करके ही हम एकात्म मानववाद को परिभाषित करेंगे। इंदौर के पांच मंडलों में पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती पर कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए गोपीकृष्ण नेमा ने कहा कि पंच निष्ठाएं संगठन का प्राणतत्व है। इनका विस्तार कर हमें जनता के सामने प्रेरक आदर्श उपस्थित करना है।

इंदौर के महूनगर और ग्रामीण मंडलों में नवकार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रदेश महामंत्री नंदकुमार सिंह चौहान ने कहा कि दुनिया पूंजीवादी और समाजवादी विचारधारा से विफल हो चुकी है। देश और विश्व को एकात्म मानववाद से परित्राण मिलेगा।

श्री चौहान ने कहा कि आने वाली चुनौतियों का भाजपा ही सफलतापूर्वक

सामना करने में सक्षम है। कार्यकर्ता समय की कसौटी पर खरे उतरेंगे। खरगौन में अर्चना चिटनीस ने कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार की क्रांतिकारी नीतियों से जनता को सकून प्राप्त हो इसके लिए कार्यकर्ताओं को सजगता का परिचय देना होगा। पं.दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद की धुरी आम आदमी, समाज का अंतिम व्यक्ति रहा है।

इंदौर के सांवेर में डॉ.शरद जैन ने कहा कि राय सरकार के प्रयासों से जल्दी ही विद्युत संकट से मुक्ति मिलेगी। बांध परियोजना में गेट लगाने के बाद भराव से 1275 मेगावाट बिजली उत्पादन में वृद्धि होगी। आपने कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे प्रदेश सरकार की उपलब्धियां जन–जन तक पहुंचाएं।

जबलपुर के मिलौनीगंज मंडल में बोलते हुए धीरज पटैरिया ने कहा कि आज जब देश के अन्य राजनीतिक दल अपना विश्वास खो चुके हैं, पं.दीनदयाल का एकात्म मानववाद ही जनता को प्रेरणा देता है। एकात्म मानववाद को जीवन में उतारकर अतीत की समृद्धि को लाकर समाज को बदलाव की अनुभूति कराएं। मंडला के नैनपुर में कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए पार्टी के प्रदेश महामंत्री और पूर्व केन्द्रीय मंत्री फग्गनसिंह कुलस्ते ने मूल्य आधारित राजनीति का विकास करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पं.दीनदयाल उपाध्याय ने कभी आदर्शों से विचलित होना गवांरा नहीं किया। तीन दशकों के बाद भी उनका एकात्म मानववाद प्रासंगिक हैं।

बालाघाट के लालबर्रा, अमोली और परसवाडा में कार्यकर्ताओं के सम्मेलन को संबोधित करते हुए श्री गौरीशंकर बिसेन ने कहा कि प्रदेश सरकार और प्रदेश भाजपा संगठन एकात्म मानववाद को व्यवहार में उतारने के प्रयास में अडिग है। भाजपा राजनीतिक दल ही नहीं एक विचारधारा है, जिसका केन्द्र बिंदु समाज का अंतिम व्यक्ति है। पार्टी की चेतना शक्ति एकात्म मानववाद में समाहित है। बाद में रात्रि में बालाघाट में श्री गौरीशंकर बिसेन ने नये कार्यकर्ताओं के साथ सहभोज में भाग लिया और सक्रिय कार्यकर्ताओं की सदस्यता आरंभ की। हरदा में वरिष्ठ नेता श्री रामकिशन चौहान ने कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया।

सतना में गणेश सिंह और रीवा में श्री चंद्रमणि त्रिपाठी ने कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया और पं.दीनदयाल उपाध्याय के जीवन दर्शन के अनुसार कार्यकर्ताओं को संस्कारित करने का आह्वान किया। विदिशा में श्री रघुनंदन शर्मा रायसभा सदस्य ने कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति से रागात्मक संबंध बनाकर उसे आत्मीयता का शीतल संस्पर्श दें।

दमोह में डॉ.रामकृष्ण कुसमरिया, पथरिया में श्री जयंत मलैया और हटा में डॉ.सुधा मलैया ने कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया।

ग्वालियर में सावरकर मंडल में आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन में अभय चौधरी ने कहा कि संगठन सर्वोपरि है। पं.दीनदयाल उपाध्याय के जीवन दर्शन से समाज का समग्र विकास होगा। कार्यक्रम में महंगाई के विरोध में प्रस्ताव पारित किया गया और आगामी व्यूह रचना पर विस्तार से चर्चा की गयी। अशोक नगर के शहरी ग्रामीण मंडलों में किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्री वेदप्रकाश शर्मा ने कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया।

श्री वेदप्रकाश शर्मा ने कहा कि पं. दीनदयाल का एकात्म मानववाद आलोक स्तंभ है। इससे समान अवसर और न्याय सुनिश्चित होगा।

ग्वालियर के डबरा में श्री जयसिंह कुशवाह ने सम्मेलन को संबोधित किया और कहा कि देश में महंगाई और भुखमरी राहुल बाबा के परिजनों की देन है। भाजपा ने राष्ट्रवाद की ध्वजा थामकर भावनात्मक एकता का परचम फहराया है। पं.दीनदयाल के आदर्श युग–युग तक आने वाली पीढ़ियों को अनुप्राणित करेंगे। ■

पं.दीनदयाल उपाध्याय जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित

भोपाल 25 सितम्बर, 09 भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य और एकात्म मानववाद के प्रवर्तक पं.दीनदयाल उपाध्याय जयंती पर यहां लालघाटी स्थित प्रतिमा पर मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, वरिष्ठ नेता श्री कैलाश जोशी, श्री बाबूलाल गौर ने पुष्पांजलि अर्पित की। श्री उमाशंकर गुप्ता, श्री विश्वास सारंग, श्री ध्रुवनारायण सिंह, श्री रामदयाल प्रजापति, श्री ओम यादव, श्री रमेश शर्मा श्री गुड्डू भैया, श्री आलोक शर्मा सहित सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

प्रदेश कार्यालय में पं. दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर सर्वश्री प्रदेश मंत्री अजय प्रताप सिंह, प्रदेश मीडिया प्रभारी गोविन्द मालू, कार्यालय मंत्री बाबा मुजुमदार, मिश्रानंद पाण्डे, भरतचन्द नायक, गिरधारीलाल पाटीदार, करतारसिंह तोमर, विष्णुदास बैरागी ने पुष्पांजलि अर्पित की। कार्यालय परिवार सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने भी पं.दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर पुष्पमाला अर्पित की।

दीनदयालजी के संग

गजब का आत्मविश्वास था उनमें

l;kjsyky [k.Msyoky

i- दीनदयालजी 1965–66 में इन्दौर आये, उन्हें इन्दौर से खरगौन कार से जाना था। वे इन्दौर में रूके। स्नान, भोजन आदि कार्य से निवृत्त हुए। खरगौन के लिए रवाना होने में कुछ समय था। वे उन दिनों ऑर्गेनाइजर में एक नियमित कालम लिखा करते थे। समय मिला तो एक लेख लिखने लगे। मैं उनके पास ही बैठा हुआ था। लेख लिखने का कार्य पूरा हुआ, तो बैग से एक लिफाफा निकाला और उसे सीधे लिफाफा में पैक करके मुझे दे दिया कि इसे पोस्ट कर दो। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उन्होंने लेख लिखा फिर उसे दुबारा पढ़ा भी नहीं और सीधे पोस्ट करने को कह रहे है। सामान्य तौर पर लोग कुछ भी लिखने के बाद उसे एक बार पढ़ते जरूर है, ताकि लिखने आदि में कोई त्रुटि न रह जाए। पर उनमें गजब का आत्मविश्वास था, जो एक बार लिख दिया सो लिख दिया। त्रुटि नहीं होगी, वह सही होगा। ऐसा विश्वास कम ही देखने को मिलता है। यह घटना मुझे आश्चर्य करने वाली थी।

सन्1966 की बात रही होगी। पंडितजी म0प्र0 के प्रवास में थे। उज्जैन के पास शुजालपुर में उनका एक कार्यक्रम था। कार्यक्रम के बाद उन्हें कार से सिहोर जाना था। इस दौरान मैं उनके साथ ही था। जब हम शुजालपुर से चले तो कार का एक टायर रास्ते में पेन्चर हो गया। स्टेपनी लगाकर हम सिहोर के लिए चल पड़े। रास्ते में कोई पन्चर बनाने वाले की दुकान भी नहीं मिली, सो पन्चर ठीक नहीं हो सका। सिहोर पहुंचने में अभी लगभग 2–3 कि0मी0 और शेष रहे होंगे कि टायर फिर पंचर हो गया। अब आगे की यात्रा कैसे हो? मैंने पंडितजी से कहा कि आप यहीं ठहरें, 2–3 कि0मी0 ही हम सिहोर से दूर हैं। मैं वहां जाता हूं और कोई तांगा आदि वाहन साथ लेकर आउंगा, फिर आप चले। उन्होंने कहा–नहीं, मैं भी तुम्हारे साथ पैदल चलूंगा। हम पैदल ही सिहोर के लिए चल पड़े। जब हम सिहोर पहुंचे, तो हमने यह तय किया कि हम सीधे श्री दीवानचन्द जी महाजन के निवास पर चले। वे उन दिनों हमारे सिहोर इकाई के अध्यक्ष थे और स्थानीय विधायक भी। मैंने महाजनजी के निवास के लिए जाने का सीधा मुख्य रास्ता चुना, पर पंडितजी ने सुझाया कि हम गलियों के रास्ते से चले तो जल्दी ही उनके निवास पर पहुंच जाएंगे और बैठक में भी विलम्ब नहीं होगा। वे मुझे गलियों के रास्ते से उनके निवास की ओर ले चले। मैं बड़ा आश्चर्यचकित था कि पंडितजी तो सिहोर केवल कुछ विशेष अवसरों पर ही आये है फिर उन्हें यह गलियों का रास्ता कैसे याद है? इस रास्ते के विषय में मुझे भी उतनी अच्छी जानकारी नहीं, जबकि मेरा सिहोर निरन्तर आना होता रहता है। मैंने अनुभव किया कि वे जहां कहीं भी बैठकों या कार्यक्रमों में जाते थे, वे वहां के कार्यकर्ता ही नहीं, बल्कि रास्ते व गलियों का भी ध्यान रखते थे कि वे कहां जा रहे है? वे उन रास्तों का स्मरण भी रखते थे।

वे बैठकों में कार्यकर्ताओं से सीधे संवाद को प्राथमिकता देते थे। उनका यह भी आग्रह होता था कि अपने इकाई के प्रधान को अपने क्षेत्र के प्रमुख कार्यकर्ताओं के नाम पते व उसके दुख–सुख की निरन्तर और पूरी जानकारी हो। एक बार वे बैठक के कार्यक्रम में म0प्र0 के देवास जिले के हाटपिपलिया कस्बे गये। वहां कार्यकर्ताओं की बैठक थी। बैठक के दौरान जो भी चर्चा होती स्थानीय इकाई का जो प्रधान था वही बार बार उत्तर देता। थोड़ी देर बाद पंडितजी ने प्रधान से कहा कि मेरी बातों का जवाब यहां बैठे अन्य कार्यकर्ताओं को ही देने दो। बैठक समाप्त होने वाली थी तभी पंडितजी ने प्रधान से पूछा क्या आपको यहां बैठे सभी कार्यकर्ताओं के नाम और पते मालूम हैं? जरा सभी के नाम बताइये। हालांकि वह एक छोटी बैठक थी और लगभग 30–35 कार्यकर्ता ही रहे होंगे। प्रधान ने कुछेक के नाम आदि बताए। पंडितजी ने बैठक के समापन में कहा कि हमारा अपने कार्यकर्ताओं से जीवंत सम्पर्क तभी बना रह सकता है, जब हम अपने कार्यकर्ता के विषय में पूरी जानकारी रखे, यही नहीं उसके दुख–सुख में समान रूप से भागीदारी करें।

पंडितजी का पार्टी में आन्तरिक लोकतंत्र पर पूरा विश्वास था। वे इस बात का पूरा प्रयास करते थे कि पार्टी के अन्दर आन्तरिक लोकतंत्र बना रहे। आन्ध्रप्रदेश में एक बैठक में किसी एक विषय के प्रस्ताव पर चर्चा हो रही थी। शायद आर्थिक विषय पर यह प्रस्ताव था। चर्चा के दौरान काफी संशोधन सुझाव के रूप में आये। कई वक्ताओं ने बोला। समय कम था। वक्ता और भी थे। अध्यक्ष महोदय ने कहा – समय कम है इसलिए और लोग जो सुझाव देना चाहते हैं, वे हमें अपना सुझाव लिखित रूप में दे दें। लेकिन दो–तीन कार्यकर्ता बार बार आग्रह कर रहे थे कि हमें बोलने दिया जाए। वे बार–बार आग्रह कर रहे थे और अध्यक्षजी मना कर रहे थे। तब पंडितजी ने बीच में अध्यक्षजी से कहा– सुन लीजिए, काफी आग्रह किया जा रहा है, थोड़ा समय और लगेगा। आखिर दो–तीन कार्यकर्ताओं को बोलने का समय दे दिया गया। उन सुझावों में एक ऐसा सुझाव आया, जिसे उस प्रस्ताव में सर्वसम्मति से तुरन्त मान लिया

गया।

पंडितजी कालीकट के अधिवेशन में जनसंघ के अध्यक्ष बने। पार्टी के अध्यक्ष पद की व्यस्तता के बावजूद वे कार्यकर्ताओं से जीवंत सम्पर्क बनाये रखने का भरसक प्रयास करते थे। कालीकट का तीन दिवसीय बैठक चल रहा था। बड़ी बैठक थी। देश भर से बडी संख्या में प्रतिनिधि इस बैठक में भाग लेने आये थे। सभी एक साथ ही ठहरे हुए थे। बैठक के उपरान्त सुबह शाम जब समय मिलता पंडितजी आये हुए प्रतिनिधियों से व्यक्तिगत रूप से मिलने उनके निवास पर आते थे। वे प्रतिनिधियों से पूरी जानकारी लेते। उस राज्य का कौन प्रमुख प्रतिनिधि इस बैठक में क्यों सम्मिलित नहीं हो सका? क्या कारण रहे? घर परिवार के हालचाल लेना। कार्यकर्ता की चिन्ता करना और इस तरह वे संगठन की चिन्ता किया करते थे।

मध्यप्रदेश विधानसभा में श्री पंढरीराव कृदत्त जनसंघ के विधायक थे। उनकी और विधानसभा अध्यक्ष से बस्तर गोलीकांड को लेकर तू–तू, मैं–मैं हो गयी। विधानसभा में हुल्लड़ हो गया। इसी बीच विधानसभा में जूता चल गया। किसी ने जूता फेंक दिया। किसी ने आरोप लगाए कि जूता कृदत्तजी ने फेंका। कृदत्तजी सस्पैंड हो गये। यह सूचना तत्काल पंडित दीनदयालजी को दी गयी। उन्हें सारी घटना बतलाई गयी। वे घटना को सुनकर तत्काल भोपाल पहुंचे। कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। सभी लोग चिन्तित थे। ऐसा लगता था कि मानो कोई मातम छा गया हो। सबको लग रहा था कि जनसंघ का नाम बदनाम हो गया है। बैठक के दौरान पंडितजी बड़ी शान्ति से सभी कार्यकर्ताओं की बात ध्यान से सुनते रहे। फिर उन्होंने कार्यकर्ताओं का सांत्वना देते हुए कहा कि कभी–कभी ऐसी घटना घट जाती है, लेकिन इससे इतना निराश होने की बात नहीं है। आखिर ऐसी परिस्थिति क्यों बनी कि जूता फेंका गया, क्या इस पहलू को अनदेखा किया जाना चाहिए? पंडितजी की इन बातों से कार्यकर्ताओं को सम्बल मिला और कार्यकर्ता निराशा से बाहर निकल सके। इस तरह पंडितजी इस बात का हमेशा ध्यान रखते थे कि कब कौन सी बात और कहां कहनी चाहिए? वे कार्यकर्ताओं की मानसिकता को समझ कर उन्हें कैसे प्रेरित किया जाए? इस बात को ध्यान में रख कर अपनी बात कहते थे। इसी तरह की एक और घटना है। म0प्र0 में इन्हीं दिनों कांग्रेस नेतृत्व वाली द्वारिकाप्रसाद मिश्र की सरकार टूट गयी। कांग्रेस के 40–50 विधायक टूटकर अलग गुट बना लिया। तब म0प्र0 में संविद सरकार का गठन हुआ। जनसंघ इस सरकार का एक प्रमुख और महत्त्वपूर्ण घटक था। इन्हीं दिनों सिहोर में दंगा हो गया। दंगे में कुछ लोग मारे गये। मुस्लिम महिला पर भी बलात्कार की घटना हो गयी। दीनदयालजी उन दिनों भोपाल प्रवास पर थे। संविद सरकार के मंत्रियों की बैठक थी। बैठक में सिहोर के दंगे की बात भी निकली। इस सरकार में गृहमंत्रालय जनसंघ के पास था। क्योंकि इस दंगे में एक वर्ग विशेष की महिला के साथ बलात्कार की घटना घटित हुई थी, इसे लेकर बैठक का माहौल कुछ ऐसा बन गया, मानो हमसे कोई बहुत बड़ा अपराध हो गया हो। तब पंडितजी ने कहा – इसमें कोई दो मत नहीं है कि जो कुछ भी हुआ वह घोर निदंनीय है। सभी के जान–माल की रक्षा करना यह सरकार का कर्तव्य है। भविष्य में इस तरह की दुबारा घटना न घटे, इसकी भी हमें पूरी चिन्ता करनी चाहिए और आवश्यक सावधानियां बरतनी चाहिए, लेकिन इस घटना से इतना अधिक दुखी होने का कोई कारण नहीं है। ऐसा नहीं कि इस तरह की घटना पहले घटित नहीं हुई है। हिन्दू समाज की महिलाओं के साथ वर्षों ऐसे अत्याचार होते रहे हैं। इसलिए इससे इतना दुखी होने की जरूरत नहीं है। ऐसा कहकर पंडितजी ने बैठक में उपजी हताशा और निराशा को बड़ी कुशलता से दूर कर दिया। सन् 1967–68 में अनेक प्रदेशों में संविद सरकारें बनीं। इन सरकारों में कांग्रेस से टूटे नेता–जनसंघ–वामदल– समाजवाद आदि दलों ने मिलकर सरकार का गठन किया। एक समय उक्त सरकार में सम्मिलित सभी जनसंघ मंत्रियों की एक बैठक भोपाल में आयोजित की गई। उस बैठक में सत्ता के कारण आने वाली अनेक बुराइयों पर चर्चा हुई। भ्रष्टाचार पर भी उस अवसर पर अपने मार्गदर्शन में पं. दीनदयालजी ने कहा कि यह सच है कि सत्ता भ्रष्ट करती है। इस सम्बन्ध में पूरी दक्षता बरतनी होगी। यदि इसके बाद भी जनसंघ में भ्रष्टाचार आ जाता है तो हम उसे विसर्जित कर नया जनसंघ बनायेंगे। इसी संदर्भ में उन्होंने अवसरवादी राजनैतिक गठबंधन को नकारा। इतने स्पष्ट थे उनके विचार।

जीवन के आखिरी महिनों की बात है। पंडितजी को किसी कार्य से दिल्ली से होशंगाबाद के पास टिमरनी में श्री भाऊ साहब भुसकुटे के यहां जाना था। वे दिल्ली अमृतसर एक्सप्रेस से आ रहे थे। भोपाल कार्यालय में इस बात की सूचना थी कि भोपाल स्टेशन में उनका दोपहर का भोजन ले जाना है। यह गाड़ी दोपहर लगभग 12 बजे भोपाल पहुंचती थी। स्टेशन में कार्यकर्ताओं के निवास से भोजन या चाय पानी मंगाने के पीछे कई कारण होते है। एक तो इसी बहाने कार्यकर्ता से मिलना हो जाता है। हाल समाचार मिल जाता है। दूसरा स्टेशन के खाने की बजाय घर का भोजन भी हो जाता है, जिससे निरन्तर प्रवास करने में असुविधा भी नहीं होती। प्राप्त सूचना के आधार पर मुझे और बापू कोरडे को भोजन लेकर स्टेशन जाना था। हम दोनों समय से भोजन लेकर स्टेशन पहुंच गये। वहां जाकर पता चला कि गाड़ी तो 4 घंटे लेट है। हम वापस आ गये। हमने अंदाज लगाया कि भोजन का समय तो हो गया है पंडितजी बीच के किसी स्टेशन पर भोजन कर लिये होंगे। 3–4 बजे जब यह गाड़ी भोपाल पहुंचेगी तब तो चाय–पानी का समय होगा। हम चाय आदि साथ लेकर स्टेशन पहुचं। यह गाड़ी लगभग 3–4 बजे भोपाल स्टेशन पहुंची। हम दोनों उनके कम्पार्टमेंट में पहुंचे। उन्हें चाय–नाश्ता देने लगे। तभी मैंने पूछ लिया– पंडितजी भोजन आदि तो आपने बीच में ही कर लिया होगा। उन्होंने कहा–नहीं। यह सुनकर तो हमें बड़ा दुख हुआ। हमने उन्हें बतलाया कि हम भोजन लेकर तो आये थे गाड़ी लेट थी सो वापस ले गये। हांलाकि टिफिन अभी भी कार्यालय में पैक रखा हुआ है। हम उसे ले आते हैं। गाडी भोपाल स्टेशन पर उस समय 15 मिनट के करीब रूकती थी। और यदि स्टेशन से कार्यालय साईकिल से जाना हो तो लगभग 5–7 मिनट लगता था। हालांकि इतनी चर्चा में 5–7 मिनट तो बीत ही गये थे। फिर भी बापू कोरडे साइकिल लेकर कार्यालय की ओर भागे। लेकिन जब तक वे टिफिन लेकर वापस स्टेशन पहुंचते गाड़ी जा चुकी थी। यह मेरी पंडितजी से आखिरी मुलाकात थी और आज जब कभी भी पंडितजी की चर्चा होती है तो मुझे यह घटना बरबस याद आ जाती है। ■

पण्डित दीनदयाल के सिद्धांतों को लागू करना हमारी प्राथमिकता : डॉ. निशंक

eख्यमंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक ने पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती के अवसर पर 25 सितम्बर को पण्डित दीनदयाल उपाध्याय सेवा प्रतिष्ठान द्वारा सुभाष रोड़ स्थित एक वैडिंग प्वाइंट में आयोजित कार्यक्रम में देहरादून स्थित पण्डित दीनदयाल उपाध्याय पार्क के समीप दीनदयाल उपाध्याय शोध संस्थान की स्थापना के लिए 21 लाख रूपये दिये जाने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने प्रति वर्ष 25 सितम्बर को पण्डित उपाध्याय की जयंती सभी शिक्षण संस्थाओं में आयोजित किए जाने के निर्देश दिये।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मलिन बस्तियों के नियमितीकरण के सम्बंध में यथोचित विचार किया जायेगा। साथ ही उन्होंने निराश्रित बच्चों के कल्याण के साथ आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों को पण्डित दीनदयाल आवास योजना का लाभ देने की भी घोषणा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज देश और दुनिया को मानवता के सम्मान व सर्वांगीणता के लिए पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के सिद्धांतों का लागू करने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मानवता के कल्याण के लिए राज्य सरकार द्वारा पण्डित उपाध्याय के नाम पर अनेक योजनायें संचालित की गई हैं। इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री नित्यानंद स्वामी ने पण्डित दीनदयाल उपाधय को योग्य विचारक बताते हुए उन्हें एकात्म मानववाद का प्रणेता बताया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बच्ची सिंह रावत ने कहा कि पण्डित उपाध्याय का सपना समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुंचाने का था, जिसके लिए प्रदेश सरकार द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। वन, पर्यावरण एवं परिवहन मंत्री तथा मनोनीत भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विशन सिंह चुफाल ने पण्डित उपाध्याय के विचारों को अंगीकृत कर प्रदेश को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम में मेयर विनोद चमोली ने कहा कि पण्डित उपाध्याय का सपना समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन स्तर में सुधार लाना था इसके लिए उन्होंने मलिन बस्तियों के नियमितीकरण का सुझाव दिया। उन्होंने दीनदयाल पार्क के समीन दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की मांग रखी।

समारोह में वरिष्ठ पत्रकार व डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध फाउंडेशन के निदेशक तरूण विजय ने पण्डित उपाध्याय को भारत की एकता और अखण्डता का परम अनुयायी बताते हुए उन्हें अपने सिद्धांतों पर अडिग रहने वाला कर्मयोगी बताया। उन्होंने कहा कि पण्डित उपाध्याय का एकात्म मानववाद आज के पूंजीवाद का विकल्प है। उन्होंने कहा कि मानवीय संवेदनाओं एवं लोकतंत्र को जिंदा रखना है तो एकात्म मानववाद अपनाना होगा। इस अवसर पर प्रतिष्ठान की ओर से पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के सहयोगियों को शाल व प्रशस्ति पत्र तथा निर्धन महिलाओं को सिलाई मशीन के साथ ही स्कूली बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर पूर्व मंत्री व विधायक अजय टम्टा, विधायक गणेश जोशी, कुलदीप कुमार सहित अनेक जन प्रतिनिधि एवं समाज सेवी उपस्थित थे। इससे पूर्व दीनदयाल पार्क में उनकी मूर्ति पर माल्यार्पण करने के पश्चात मुख्यमंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा कि एकात्म मानववाद के प्रणेता, समर्पित राष्ट्रवादी विचारक और महान समाजसेवी पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के सिद्धांतों पर चलकर ही राष्ट्र एवं विश्व का कल्याण होगा। इस अवसर पर नगर निगम के मेयर विनोद चमोली, विधायक विकासनगर कुलदीप कुमार, भाजपा के वरिष्ठ नेता रविन्द्र जुगराण, विनय गोयल, नगर पालिका मसूरी के अध्यक्ष ओ.पी. उनियाल, जिला पंचायत सदस्य सुभाष भट्ट सहित अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित थे। ■

गुजरात

'तो सोमनाथ आता रहूंगा' : लालकृष्ण आडवाणी

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि जब तक अयोध्या में राम मंदिर नहीं बन जाता, वे हर वर्ष 25 सितम्बर को सोमनाथ आते रहेंगे। उन्होंने कहा कि उनकी ख्वाहिश है कि अयोध्या में एक भव्य राम मंदिर का निर्माण हो।

उन्होंने कहा कि इक्कीसवीं शताब्दी भारत की होगी। सोमनाथ से अयोध्या तक 1990 में निकाली गई राम रथयात्रा की वर्षगांठ पर श्री आडवाणी केशोद हवाई अड्डे पहुंचे और वहां से सोमनाथ पहुंचे। उन्होंने भगवान सोमनाथ महादेव की पूजा–अर्चना की। बाद में संवाददाताओं से बातचीत में श्री आडवाणी ने कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था। अयोध्या की तरफ भी केन्द्र सरकार को ध्यान देना चाहिए।

इससे पहले केशोद हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया गया। उनके साथ उनकी पुत्री प्रतिभा भी थीं। इसके अलावा सांसद दीनू सोलंकी, पूर्व सांसद भावना चिखलिया, रमण वोरा, एल. टी. राजाणी, विधायक राजसी जोटवा, वंदना मकवाणा इत्यादि ने भी श्री आडवाणी का स्वागत किया। ■